

एक्जिबिट ए : 26

O.O.S. No. 1 of 1989

(R.S. No. 2/1950)

बअदालत जनाब सब जज साहेब बहादुर फैजाबाद

नकल तजवीज बमुकदमा बमुकदमा 61/280 सन् 1885 ई० मुजव्विजा पं० हरि किशन
साहेब सब जज बहादुर फैजाबाद मोरिखा 24 दिसम्बर सन 1885ई०

महन्त रघुबर दास महन्त स्थान जन्म स्थान वाकै अयोध्या

बनाम साहेब सेक्रेटरी आफ स्टेट हिन्द व मोहम्मद असगर

दावा इजाजत तामीर मंदिर

तजवीज अदालत—

आज यह मिसिल बहाजिरी मुद्दई व कक्कूमल वकील उसके व पंडित विशम्भर नाथ वकील सरकार व मोहम्मद असगर मुद्दालैय व वकील उसके पेश होकर बमुलाहिजा जुमला कागजात मिसिल वाजैह हुआ कि मुद्दई जन्म स्थान का महन्त है उसकी नालिश बनाम सेक्रेटरी आफ स्टेट पेश हुई बाद अजां मोहम्मद असगर हस्बे दरखास्त उसके मुद्दालैय करार दिया गया । खुलासा दावा मुद्दई यह है कि चबूतरा जन्म-स्थान पूरब-पच्छिम 21 फिट, उत्तर-दक्खिन 17 फिट मकबूजा मुद्दई है और उस पर कोई इमारत न होने हर मौसम में मुद्दई व दीगर फुगरा को निहायत तकलीफ़ होती है गरमी में तपिश से व बरसात में पानी सरमा में शिद्दे सरदी से व इस चबूतरे पर तामीरे मंदिर से कोई हर्ज नहीं है । जो परस्तिश अब होती है वही होगी वजूह मिनजानिब साहेब डिप्टी कमिश्नर तामीर मंदिर में मुमानियत होती है इसलिए मुद्दई मुस्तदई है कि तामीर मंदिर उपर चबूतरा मजकूरा फरमायी जावे व बजरिये मरम्मत :अपठनीय: तरीख जहूर बिनाये दावा 15 जून सन 1884 ई० जाहिर करे । वकीले सरकार ने जवाब तहरीरी में बखुलासा पेश किया कि चबूतरे से मुद्दई को बेदखल नहीं किया इसलिए बिनाये दावा पैदा नहीं है और दावे में हद्दे समाअत भी आरिज है और चाराजोई मुतादावेआ का मुद्दई मुस्तहक़ नहीं है । मोहम्मद असगर मुद्दालैय ने जवाब तहरीरी बदीं खुलासा

दाखिल किया कि स्टाम्प नालिश काफी नहीं है बलिहाज़ कीमत इमारत स्टाम्प लगना चाहिए और हदे समाआत भी आरिज़ है और आराज़ी चबूतरा ज़ायद कायम है और मकबूजा मुद्दई भी नहीं है और मुद्दई को उस पर तामीर करने को कोई बहुत बार मुमानियत हो चुकी है। बनज़र बहालाते मुक़दमा छः अमर तनकीह तलब करार पाये थे :1: अक्वल यह कि आया यह नालिश बकागज स्टाम्प काफी है।

:2: दोयम मियाद समाआत आरिज़ है । :3: सोयम अगर नहीं तो ज़हूर बिनाये दावा पैदा है। :4: चहारुम ऐसी दादरसी जायज़ है या खिलाफ़ कानून :5: पंजुम तादाद आराज़ी चबूतरा किस कदर है। :6: शशुम वह आराज़ी चबूतरा मिल्कियत व मकबूजा फरीकैन में से किसकी है । बारे सबूत तनकीह अक्वल व सोयम व चहारुम व शशुम जिम्मे मुद्दई व दोयम का बारे सबूत जिम्मे मुद्दालैय व पंजुम मुतालिक पैमाइश व तरदीद तनकीह शिशुम जिम्मे मुद्दालैय तजवीज हुई है । और मारफत गोपाल सहाय अमीन नक्शा मौका मुतनाज़िया खिंचवाकर शामिल मिसिल हुआ जो : अपठनीय: मौका के बाद लाएके तरमीम समझा गया कि तरमीम उसके होकर वह इबारत तरमीम दर्ज नक्शा के की बनिस्बत तनकीहात के फ़रीकैन ने कागजात ज़ैल पेश किये—

सुबूत तहरीरी मिनजानिब मुद्दई

नकल इन्तेखाब गज़ेटियर सूबा अवध सफ़ा 7 मतबूआ हुक्म गवर्नमेंट मई जरनल एशियाटिक सोसाइटी बाबत तरजुमा अयोध्या महात्म

सबूत मिनजानिब मुद्दालैयू

हुकुम :अपठनीय: साहब बहादुर कायम मुक़ाम डिप्टी कमिश्नर मय तरजुमा हुकुम कायम मुक़ाम साहेब कमिश्नर बहादुर

नकल तजवीज इजलासी :अपठनीय: साहब बहादुर सब कमिश्नर व मन्जूरी जनाब :अपठनीय: साहब डिप्टी कमिश्नर बहादुर निस्बत इन्हिदाम मकान रसोई सीता जी

परचा दस्तखती फारबेस साहब बहादुर साबिक डिप्टी कमिश्नर बहादुर मारुजा 23 फरवरी
 सन 1857 ई० नकल हुकुम साहेब डिप्टी कमिश्नर बहादुर 6 दिसम्बर सन 1885 ई० नकल
 फ़ैसला इजलासी :अपठनीय: साहब बहादुर :अपठनीय: 3 दिसम्बर सन 1860ई० व 16 मार्च
 सन 1881 ई० बमुकदमा मीर रजब अली बनाम :अपठनीय: सिंह नकल कौफ़ियत भोलानाथ
 दरोगा नजूल 8 सितम्बर 1866ई० नकल हुकुम मिर्जा खुदादाद बेग साहेब बमोजिब मन्जूरी
 हुकुम साहब डिप्टी कमिश्नर बहादुर 12 जनवरी सन 1884ई० नकल हुकुम जनाब असिस्टेंट
 कमिश्नर :अपठनीय: मोहम्मद असगर मुद्दई बनाम गोविन्द राम नकल अर्जी गुरमुख सिंह
 साकिन शहर लाहौर 18 मई सन 83ई० नकल अर्जी व हुकुम मीर शाह मुन्शी वगैरह
 :अपठनीय: 17 जनवरी सन 1885ई० बरसरे मौका बहाजिरी फ़रीकैन व वकील मुद्दई व
 दरोगा नजूल तहीकीकात अमल में आई चार चार गवाहान मिनजानिब मुद्दई व मु० असगर
 मुद्दाअलैह पेश हुए के बयानात लिये गये मिनजानिब सरकार कोई गवाह पेश करने की
 ज़रूरत न समझी गई । बाद समात बहस वुकला फ़रीकैन निसबत तनकीह अव्वल के
 ज़ाहिर है कि मुद्दई की चारा जूई इस अम्र की है कि इजाज़त तामीर मंदिर की दी जावे
 । मिनजानिब मोहम्मद असगर मुद्दाअलैह है कि जिस कदर लागत का मंदिर तामीर किया
 जावे उस खर्चे पर स्टाम्प होना चाहिए या चबूतरे की कीमत लगाकर स्टाम्प

दाखिल होना चाहिए । बमुलाहिजा ज़मीमा दोयम दफ़ा 17 ज़िमनी 6 एक्ट 7, 1870 ई0 यह साफ़ ज़ाहिर है कि जिस शै मुतदाविया की कीमत बमोजिब निख़ बाज़ार के हो सकती हो उसके लिए 10 रु0 का स्टाम्प काफी है। तामीर मंदिर सौ में भी व हजार व ज़ायद उसे चन्द हजार में भी हो सकती है। कोई ताअयुन उसका नहीं है पस इजाज़त ऐसी तामीर के लिए ताअयुन निख़ बाज़ार नहीं हो सकता व चबूतरे की दख़लयाबी का दावा नहीं है कि कीमत चबूतरा पर स्टाम्प लिया जावे इसलिए स्टाम्प 10 रु काफी व वाजिब है ।

निस्बत तनकीह दोएम वाजेह हुआ कि कोई इत्तिलानामा ममलूका दफ़ा 145 ज़ाबते फ़ौजदारी का साहेब मजिस्ट्रेट ज़िला ने हस्ब ज़ाबिता बनाम मुद्दई जारी नहीं फ़रमाया कि जिसका मन्सूख़ करना मुद्दई पर वाजिब होता एक शख़्स गुरमुख सिंह पंजाबी वास्ते तामीर मंदिर के पत्थर लाया था कि उसके उठाने के वास्ते साहेब डिप्टी कमिश्नर बहादुर ने बनाम गुरमुख सिंह हुकुम नाफ़िज़ फ़रमाया व जो

हुकुम साहेब बहादुर :अपठनीय: ममदुहूल है वह साफ़ है कि मुन्शी लाल व राम नरायन जिसका कारिन्दा गुरमुख सिंह और जो पत्थर वास्ते बनाने के लाया है इजाज़त नहीं दी जा सकती और साहब कमिश्नर बहादुर ने अपील इस बिना पर नामंजूर फ़रमाई है कि कब्ल से कोई इजाज़त तामीर के नहीं की हस्ब कायदा जरूर है कि कत्रबल से इजाज़त तामीर हासिल की जावे पस बमुकाबले मुद्दई कोई हुक्म मुमानियत तामीर मंदिर पर चबूतरा सादिर नहीं हुआ पस मुद्दई किसी हुक्म को मन्सूख कराना वाजिब व लाज़िम नहीं और नज़ीर पेश करदा वकील सरकार से ताल्लुक नहीं है क्योंकि उस नज़ीर में हुकुम बमुकाबले मुद्दई सादिर हुआ था इस मुकदमे में बाबत तामीर चबूतरा कोई हुकुम बमुकाबले मुद्दई नाफ़िज़ नहीं हुआ अलावा बरीं बमुलाहज़ा दफ़ा 23 एक्ट 15 सन 1877 यह अमर अयां है कि ऐसे मुकदम में हर वक़्त नालिश हो सकती है क्योंकि जब जब हुकुम नामन्जुरी का दिया जावे उससे जदीद बिनाये दावा पैदा होने पर नालिश जदीद हो सकती है अलावा इसके बमुकदमात हमजो किस्म के लिए कोई ख़ास मद एक्ट हद समाअत में पाई नहीं जाती है। इसलिए छः साल की मीयाद बमोजिब मद नम्बर 120 एक्ट 15 सन 1877 ई0 दुरुस्त" और मुनासिब मालूम होती है इसलिए इस मुकदमे में कोई मियाद आरिज़ नहीं है । निस्बत तनकीह सोयम बिला उज़र मुद्दाअलैह के हद समाअत आरिज़ व साथ उसके उज़र यह पैदा हुई बिनाए दावा नाकिस पाये जाते हैं अलावाबरीं मुद्दई को मुमानियत तामीर की जाती है और मुद्दई लोकल गवर्नमेंट में अर्जदाश्त के उस पर मुद्दई को हुक्म तामीर सादिर नहीं हुआ बिना दावे हाज़ा को ज़रूर व मुद्दई मुस्तहेक नालिश का है । निस्बत तनकीह पन्जुम के मौक़े पर पैमाइश की और पैमाइश नक्शा सही है जो मुताबिक मुन्दर्जा दावा है कि मु हम्मद असगर को भी उस तादाद मुन्दर्जा अर्जी दावा में अब कुछ उज़र न रहा बल्कि वह कुछ तादाद कुछ इन्च में कम है तादाद फीट सही है। निस्बत तनकीह शशुम बमुलाहिज़ा मौक़ा ज़ाहिर है कि चर यानी पादुका नक्शा है

जिसकी परस्तिश होती है सिवाय इसके चबूतरे से मंदिर बाकैय चबूतरे पर एक मूरत ठाकुर जी रखी हुई है जिसकी परस्तिश होती है। चबूतरा मकबूजा मुद्दई है कि जो कुछ उस पर चढ़ावा चढ़ता है वह मुद्दई लेता है कि इस बात यानी चढ़ावा को इस वक्त मुहम्मद असगर मुद्दाअलैह भी तसलीम करते हैं। गवाहान मुद्दई से कब्ज़ा मुद्दई का बखूबी साबित है कि इस वजह से दीवार कटहरेदार हद हिन्दू मुसलमानान अहदा अर्से से कायम हुई है जिसका जिक्र आइन्दा मौके पर होगा। गवाहान मुद्दाअलैह कब्ज़ा चबूतरा मुद्दई से नवाकफ़ियत जाहिर करते हैं। दरमियान मस्जिद व चबूतरे के एक पुख़्ता दीवार कटरेहदार है कि नक्शा मुरत्तिबा अमीन इसलाहे दावा के मुलाहिजा से बखूबी क़ैफ़ियत मौका मुनकशिफ़ हो सकती है और साफ़ जाहिर है कि हुदूद दरमियान व चबूतरे की कायम की गई है और इसकी ताईद सरकारी गज़ेटियर से जो कब्ल मुतानाज़ा हाल के मुरत्तिब हुआ बखूबी हासिल है कि पेशतर हिन्दू व मुसलमान दोनों इस मुक़ाम पर परस्तिश करते थे सन 1855 में बाद लड़ाई दरमियान हिन्दू व मुसलमान एक दीवार कटहरे की वास्ते रफ़े निज़ा के बना दी गई कि अन्दर उसके मुसलमानान व बाहर हिन्दू लोग परस्तिश करें इसलिए बाहर के दर्जे की आराज़ी मय चबूतरा मकबूजा मुद्दई व हिन्दू लोगों की है। बाकी रही तनकीह चहारुम जिसपर दारोमदार डिग्री डिसमिस मुक़दमे का है यह मुक़ाम अलल उमूम मिस्ल दीगर तामीरात नहीं है कि मालिक व क़ाबिज़ को इख़्तयार तामीर मकान उपर अपनी आराज़ी व मकबूजा के हासिह है बमुलाहिज़ा मौके की सूरते ख़ास उसकी पाई जाती है कि नक्शे से मालूम हो सकता है यह मंदिर जाने का एक ही राह है गो उस मुक़ाम पर जहां अहले हुनूद परस्तिश करते हैं क़दीम कब्ज़ा उनका है जिससे मिलकियत उनके में कोई कलाम नहीं हो सकता है और उसके इरद गिरद में मौके पर दीवार मस्जिद की पाई जाती है कि दरवाज़े बेरुनी पर लफ़्ज़ अल्ला कुन्दां है पस ऐसे मुक़ाम व चबूतरा पर अगर मंदिर बनाया जावे तो मुत्तसिल व मुलहिक मस्जिद के घन्टा व शंख भी बजा करेगा जब कि एक ही रास्ते से दोनों फ़रीक हिन्दू व मुसलमान की गुज़र है और

मंदिर हिन्दुओं को बनाने की अगर इजाजत दी जावे तो ग़ालिबन एक न एक रोज़ मुक़दमा फौज़दारी बरपा होकर नौबत कुशत व खून हज़ारहा आदमी हो जावेगी इसी मसलेहत से हुक्काम फौज़दारी ने वक़तन फ़वक़तन मुमानिअत तामीर जदीद मकान मज़हबी फ़रमाई है इसलिए यह अदालत भी ख़ियाल करती है कि मंदिर बनाने की इजाजत ऐसे मौक़े पर देना गोया बुनियाद एक जंग व फ़साद की जालनी है पर दरमियान हुनूद व अहले इसलाम दो फ़िरक़े मुख़लिफ़ के मसलेहत वक़्त इसी की मुक़तज़ी है और बदानिस्त इस अदालत के ऐसे मौक़े ख़ास पर इन्साफ़ भी यही चाहता है कि ऐसी दादरसी की इजाजत न दी जावे और उसूले क़ानून मुआदेहा के देखने से इस अदालत पर ज़ाहिर होता है कि इस मुआहदे की तामील किसी फ़रीक़ से न कराई जावे जो मुआहिदा ख़िलाफ़ मसलहेत आम के पाया जावे । पस हसब वजूहे बाला इस अदालत की राये में यह दादरसी मुद्दई तरीक़े जायज़ के ख़िलाफ़ मुतसव्विर है जिससे नतीजा इस तन्कीह का बहक़ मुद्दाअलैहिम व दीगर तंकीहात का बहक़ मुद्दई फ़ैसल होकर –

हुक्म हुआ कि

हसब दफ़ा 198 ज़ाब्ता दीवानी दावा मुद्दई डिसमिस ख़र्चा फ़रीक़ैन ज़िम्मे फ़रीक़ैन मुक़दमा दाख़िल दफ़्तर होवे ।

24 दिसम्बर सन 1885 ई० ।

दस्तख़त हरिकिशन सब जज

O.O.S. No.1/1989
(R.S. No.2 of 1950)
Paper No. 95
Ext.A-27

In the Court of the District Judge Faizabad

Civil Appeal No. 27 of 1885

Copy of judgement dated 18.5.86

passed by Coll. F.E.A. Chamier

District Judge, Faizabad in re-

Mahanth Raghubardas ..Plaintiff.

Vs.

1.Secy. of State of India 2. Mohammad Asghar...Defendant.

Appeal against the judgment and decree of Sri P. Hari Kishan, Sub-Judge,
Fyzabad, dated 24 December 1885, dismissing plaintiff's Claim for permission of
construction of temple

March 18, 1886

Parties represented

I visited the land in dispute yesterday in the presence of all parties.

I found that the masjid built by the Emperor Babar Stands on the border of the town of Ayodhya, that is to say to the West and South it is clear of habitations. It is most unfortunate that a masjid should have been built on land specially held sacred by the Hindus, but as that event occurred 356 years ago , it is too late now to remedy the grievance all that can be done is to maintain the parties in status qua . In such a case as the present one any inaction (sic) would cause more harm and derangement of order than benefit.

The entrance of the enclosure is under a gateway which bears the superscription "Allah"-immediately on the left as the platform or chabutara of Masonry occupied by the Hindus. On this is a small superstructure of wood in the form of a tent.

This chabutara is said to indicate the birth place of Ram Chandra . In

front of the gateway is the entry to the masonry platform of the masjid. A wall pierced here and there with railings divides the platform of the masjid from the enclosure in which stands the “Chabutara.”

The words of the Sub Judge “ Bahari Ke durja ke arazi mai chabutara makbooza mudai wa Hindu logon ke hai- jo is mukam par ahil hunud paristis karte hai kadim kabza unka hai. jis se milkiyat unke mai koi kayam nahi hai ho sakta hai.”

The words are redundant and are to be struck out of the judgement. The only question decided in this case is that the position of the parties will be maintained.

The true object of the suit was disclosed by B. Kuccu Mal yesterday when we were standing near the masjid - namely the British Govt. as no respectable persons was asked. through its Courts to remedy an injustice committed by a Mohammadan Emperor. The Dy. Commissioner contends that the civil Court jurisdiction in this matter. The relief asked for brief in contravention of Clause (d) of Section 56 .Act I, 1877. It is not clear to me how the order of the 14 May, 1883 can be said to have been issued in connection with the public duties of any department of the Govt. of India on the local Government on the contrary the plaintiff states that the local Government has sent him no answer to his application . If it be said that the order of the 14 May, 1883 was passed by a Magistrate, then the section of the Criminal Procedure Code should have been cited under which the order was passed at page 304 V. I.L.R ,it is laid down that persons of whatever sect are at liberty to erect buildings there in conduct public worship provided neither invade the rights of property enjoyed by their neighbours nor cause a public nuisance etc. and subject to such directions as the Magistrates may give to prevent obstructions of the thorough fare or breaches of the public peace.

If the particular act complained of is to be viewed as the act of Govt. and that in the part which the Depy. Commissioner took he merely acted as officer of the Government intending to discharge his duties as a public servant with perfect good faith, even on the assumption if the act of the Depy. Commissioner was itself wrong as against the plaintiff and produced

damage to him, the plaintiff must have the same remedy by the action against the door(sic) whether the act was his own or whether it was done by order of the Superior powers. The civil irresponsibility of the local Government could not be maintained with any show of justice if its agents were not responsible from tortuous acts . The reason why this suit is dismissed is that there is no “injuria” nothing which would give a right of action to the plaintiff.

The decisions, which I have been able to find as to the jurisdiction of the Civil Courts being barred refer to questions of a public right determined by a Magistrate -for instance a Civil Court could not entertained to set a side an order of a Magistrate which declares a road to be a public road .

This appeal will be dismissed as the Mohammadan defendant intervened of his own will , his costs will be paid by plaintiff only as to Court fees and costs of copies the Government pleader is allowed costs Rs.16/- in each Court.

18/26 March 1886

....

Sd./ F.E.A. Chamier.

District Judge.

Ext. A-42

**O.O.S. NO. 1 OF 1989
(R.S. NO. 2/50)**

J u d g m e n t

Suit no. 29 of 1945.
Shia Central Board, U.P. Waqf,(Lucknow)
vs.
Sunni Central Board U.P. Waqf (Lucknow).

The dispute in this suit relates to an ancient and historic mosque in Janamasthan, Ajodhia, which was admittedly constructed during the reign of Babar Shah over four centuries ago. After the enactment of the U.P. Muslim waqfs Act (XIII of 1936), the mosque was included amongst the Sunni waqfs, a list of which was prepared by the chief Commissioner of Waqfs under S.4 of the Act and published in the Govt. Gazette, D.26.2. '44' (and has been under the depts. superintendence since then).

The plaintiff (Shia Waqfs Board)Seeks a declaration that the mosque is a Shia waqf together with the Idgah attached to it at Jalpa Mala, Ajodhia, and v. Bahrapur, Pargana Haveli, and 20 bighas odd land, known as Sholapuri grove Mahal Bahrapur, in Faizabad Tahsil. The case as sset out in the plaint was that the mosque was founded by Abdul Baqi, an Isna Ashri Shia, that it had been all along in possession of Shias who have been reciting there prayers therein and that its mutwallies too were shias belonging to Baqi's family. As regards the property, it was stated that the Nawab Vizor and subsequently the kings of Oudh, had granted a cash Nankar of Rs. 302/3/6 through parwanas & sannds for the maintenance of the mosque which was realised from the revenue of V. Shahnawa. The plaint proceeded that on the annexation of Oudh, the Nankar grant was maintained but the entire village Bahrapur and the Sholapur Grove was granted to the mutawallies for themaintenance of themosque and a decree for proprietary rights, revenue fee was passed in favour of the mutawallies at the time of the Ist. regular settlement and that the mutawallies had been observing the trees of the grant and filing

accounts before the S.D.O.

Under the circumstances narrated above, the plaintiff claimed that he was entitled to its supervision as it was a Shia waqf as contemplated by the Act prior to the institution of this suit (on 4.7.45) the plaintiff had also sent a notice as required by S.53 and the cause of action was based on the publication in the Gazette as it was alleged that the chief commissioner of waqf had not sent the list of Sunni waqf to the plaintiff.

The deft (Sunni Board) asserted that the mosque was founded by Emperor Babar who was a Sunni, that is feshnavaz Khatebbad Muezzis have been of the same seat and that it had always been used by the Sunnis of Ajodhya for saying their Friday prayers. He further alleged that formerly the mutawallies were also sunnis , but it appears that one of them became a convert to Shiaism during the closing period of the reign of the kings of Oudh (who were Shias). The deft further denied that Baqi was Shia and that the mutawallies belonged to his family.

As regards the Idgah it was alleged that it was quite independent of the mosque but was similarly used by the Sunnis for their Id and Baqrid prayers. The deft. also agreed that v. Baharanpur and the Sholapur Grove were dedicated for the maintenance of the mosque. There were some other legal pleas also set up on defence which will appear from the issues.

the following issues arose for trial on the pleading (& the replications) in this case:-

1. (a) Was the mosque in suit built by Abdul Baqi as alleged by the plaintiff? If, so, was he a Shia as alleged?
- (b) Whether the mosque or was constructed by Babar Shah as alleged by the deft ?
2. Is the suit within time?
3. Has the mosque in suit been used by the members of the Sunni

Act as alleged by the deft. for over 12 years? If so, its effect ?

4. Is the notice, Ex A-7 defective ? If so, its effect ?

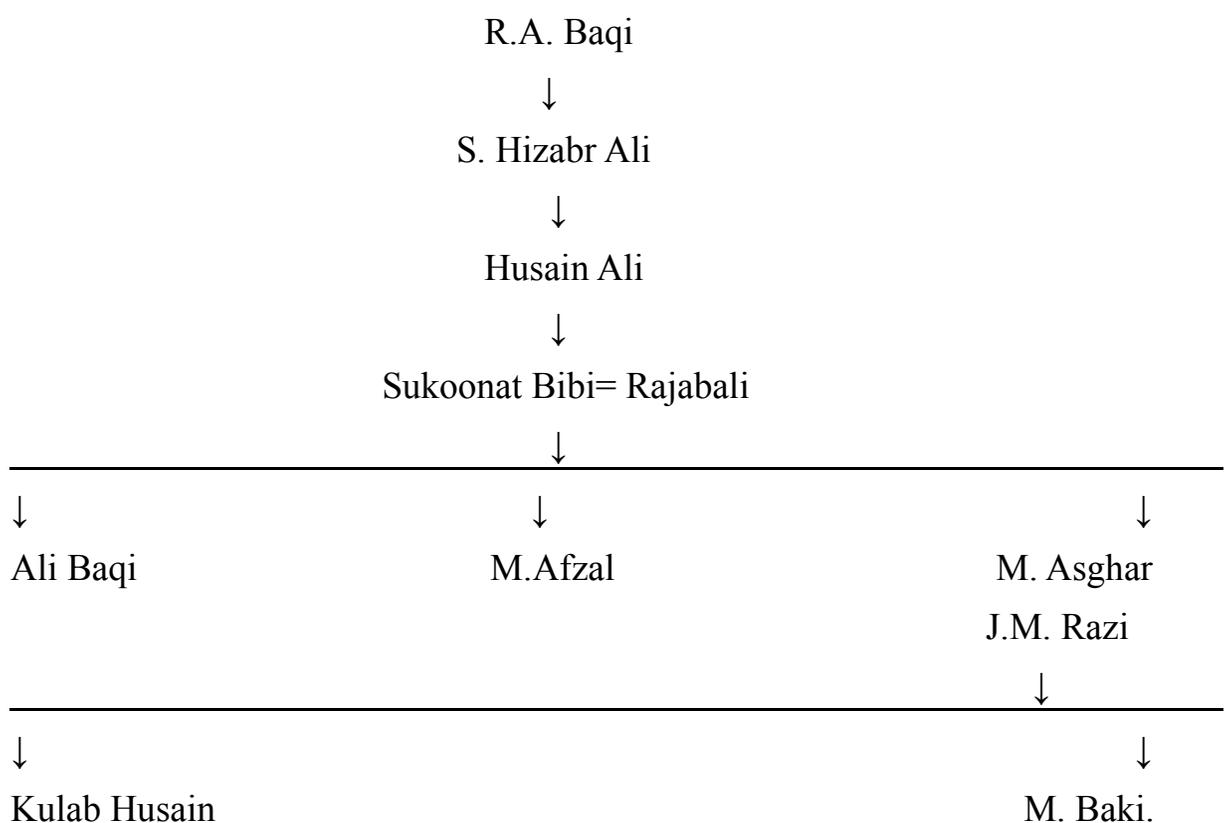
5. To what relief, if any, is the plaintiff entitled?

Findings

Issues 1(a) & (b)

As has been mentioned the plaintiff has in support of his case relied upon the fact that the mutawallis have all along remained Shias and were the descendants of Abdul Baqi. It would be convenient to dispose of the question whether the mutawallis are the descendants of Abdul Baqi before taking up the main question as to who was the founder of the mosque.

In the replication the following pedigree was given:-



This pedigree has not been seriously challenged as the deft. has not given a counter pedigree and it was admitted on the oral pleadings

that Kalab Husain is the present mutawalli and before his (his brother) M. Zaki was the mutwawalli until about a year ago, Kalab Husain pedigree and says that he had heard it from M. Zaki and their father and their Phoophi, Mat. Elahan, all of whom are dead. Then there is the testimony of Mumtaz Husain (P.W.2) a retired Tahsildar, about 83 years old, and a Zamindar of this district. His grand daughter's daughter is married to Kalab Husain and he further deposes that his elder brother, Altaf Husain, was he further deposes that his elder brother, Altaf Husain, was married to the daughter of Mohd. Ali, a broooother of Rajabali and that he hs been Sarfarazali, another brother of Rajabali and M. Asghar (his son) from whom he heard the pedigree.

This witness was posted in this district as a Girdawar Qanoongo in 1889-90 and subsequently as a Munsarim during the 2nd settlement operation in 1892-93 and had occasion to go to V. Shahnawa, about 3 miles from Ajodhia, which is the village in which Rajabali and his descendants have been residing. Lastly there is the deposition of S. Naze Husain (P.W.3) who is about 32 years old and testifies that he is agrand son of Mohd. Ali, one of the brothers of Rajabali, and that his mother was the daughter of M.Afzal son of This witness is a resident of village.....heard the pedigree from his parents who are dead. There is one more witness on this point, namely S. Mohd. Husain (P.W.4) who is a resident of Ajodhya and deposes to being a grandson of Sayed Ali, one of the brother of Rajabali, and that he heard in the pedigree from his father who is dead. The last two witnesses also depose that Rajabali and his brothers were the sons of Fateh Ali.

This pedigree finds indirect support from the defendant's witnesses also who deposs that they heard from their ancestors that the former mutawallis were Sunnis and that Rajabali too was that first a Sunni but had become a Shia later on. There is also Ext. A-13, which is an application by M. Zaki datd 20.7.1938, to the commissioner of Waqfs, Faizabad, objecting to the treating of Bahorampur and the land

in Bholapur waqf property and claiming that he had his ancestors were its proprietors. In this application too he gave his family pedigree which is further substantiated by Exs. 2/P.W. 1 and A 12 which are documents of the Summary settlement (1960).

As regards Abdul Baqi (who was admittedly a contemporary of Babar Shah) being a Shia, para 1 of Ex.A 13 contains a statements that all the persons given in the pedigree were Isra Ashri Shias. There is also the admission of the defendants' witnesses to which I have already referred, and in the opening of his case. Defts' learned counsel admitted that the descendants of Rajabali were Shian. The witnesses who have deposed about the pedigree have also stated that they heard from their ancestors that Mir Abdul Baqi(or Baqi) was a Shia and had come from Isphahan in Persia. There are verses engraved on tablet in the central arch of the mosque which will be repaired to later on, on which Mir Baqi has been described as an "Isphahani" i.e. a resident of Isphahan.

It was urged on behalf of the defts that the evidence about Mir Baqi being ashia was in admissible as it did not fall within the provision of S.32 (5) of the Evidence Act used in the absence of any.....the contrary the perusal presumption was for the second proportion learned counsel relied upon the decisions reported in 30 Cal. (I.L.R.) 683 (at P. 686) 1932 Bombay (I.L.R.) 356 and 1933 Lah. (A.I.R.) 80.

There is no doubt that these authorities lay down that unless the contrary is proved, the general presumption is that the Muslims in India are (Hanafi) Sunnis but it is displaced by an equally good presumption in the present case, that Baqi being a Persian was a Shia as is borne out from the following passage in Bailie's Digest, Pt. II. P.1 (2nd Edition) Referring to the Arabian adage that "all people follow the religion of their kings". He says:-

" the saying was exemplified to the fullest extent in Persia, where the whole of the people have become Shofia (sik) since the

accession of the Sofee (aafavi) dynasty in A.D. 1499. The process of assimilation was less rapid in India, where though several of the Nawabs, or local governors, were (Sheealis (Shias..... This was eminently the case in Oudh (oudh), the Nawabs of which were hereditary viziers (Wazirs) of the empire.....”

Now the mosque in suit was admittedly built during the time of Babar who ruled from 1526-1530 and is clear from the passage granted above that the Persians had become Shias before that period. It follows, therefore, that the presumption in the present case is that Baqi must have been a Shia. As regards the admissibility of the statement in S.13 and the deposition of the witnesses it has been observed in 1 Luck. (I.I.R.) 97, (at p.145) that a very liberal interpretation must be given to the words in S 32 (5) that “when the statement relates to the existence of any relationship by blood-relations”, otherwise valuable evidence of family history would be excluded. In 27 I.S. 238 (at p.251), their lordships held that under S.49, the opinion of persons having especial means of knowledge regarding the usages of any family, are relevant. Lastly, in 1929 Cal. (A.I.R.) 533, it was laid down that declarations made before the controversy by dead persons on a matter of general or public interest, eventhough, hearsay, are admissible. In the present case, the witnesses examined by the plff on this point are related to Baqi’s descendant, Sukoonat Bibi, and they depose to statements relating to a matter of general interest to the Muslim community as regards the mosque having been built by a Shia and also about the family traditions.

I, therefore, held that the evidence in this case proves that Abdul Baqi was a Shia.

Turning now to the main question whether the mosque was built by Abdul Baqi or by Babar Shah. It may be mentioned at the very outset that it was conceded by counsel for the plff. that Babar Shah was a Sunni, although in the replications a contrary assertion was made. It was also common ground between the counsels on both sides

that the determining factor whether the mosque in suit was a “Shia” or “Sunni” waqf would be the religion of its founder as neither the waqf Act (XIII of 1936) nor the Muslim Law laid down any distinction between the two, and there was no prohibition for members of either sect to say their prayers in a mosque built by a member of the other sect.

The plff. has examined seven witnesses (P.ws 2-8) which include the witnesses who have deposed the pedigree in support of the mosque having been built by Baqi. All of them are Shias and depose to having said their daily prayers also sometimes in the mosque in suits.

It appears from the statement of S.Murtaz Husain (P.W.2) that besides learning from the members of Baqi’s family, namely M.Asghar and Sarfarazali (brother of Rabaali) and his own father that Baqi was one of the ministers of Babar and had built the mosque, he also made some inquiries in 1892-93 as Munsarin during the 2nd settlement. The witness deposes that Mr. Hoses the settlement officer, had asked him to find out the important placed in Ajudhia as he was going to visit it and the witness made inquiries from M. Abdul Karim, the Nazir Sadar and one Mir. Forzand Ali of Ajudhia, bother (sik) of whom are dead. S. Nazer Husain (P.W.3) mentions his mother who had heard from Sukoonat Bibi about the mosque, and Akbar Ali, Ashiqq Ali and Nasir Ali, sons of Syed Ali, a bother of Rajab ali. It may be mentioned again that he is a descendant of Mohd. Ali, another brother of Rajabali and his mother was a grand daughter of Rajabali. S. Mohib Husain (P.W.4) is a descendant of Syed Ali and says that he heard from his father (who was S/o Syed Ali), his uncle, Akbar Ali, who are dead that the mosque was built by Abdul Baqi. Kalab Husain (P.W.8) is the present mutawalli and says that he learnt from his father (M Razi) his brother, M.Zaki (who died only recently) and his father’s sister Mst. Elahan,that the mosque was built by Abdul Baqi. He further deposes that he maintains the mosque out of the income of it V.

Baharpur and some land in V. Sholopuri, though he did not admit that it was waqf property. He admits that the Peshnamaz (or the Imams) and the muozzies (who are paid by him) have been Sunnis and that the expenses of faraweek (sik) i.e. the distribution of Sweets and payments of persons who recite the Qoran during the month of Ramzan have been met by him and his father, who died about 30 years ago.

The other set of witnesses, namely S. Husain Agha, Mirja Ali Husain and Kammant Husain (Ps.5-7) are residents of this city and depose to having attended an iftar (fast breaking) party by S. Hasan Agha in 1932 and 1936 when a majliss was held and collective prayers were said. The mother of Rahan Aghar come from mohalla Qaziana of a Ajodhia and he deposes that he heard from her, his father and some other persons about Baqi being the governor of Oudh during Babar's time.....

The source of to be Mohd. Zaki, who was a frined of Mirza Ali Husain (P.W.6) as well as of Karamat (P.W.7) and they also used to go to Bhahnawa for attending majlisses during the chehlum. Their evidence is not of much consequences in view of the fact that the Ist set of witnesses are more qualified on account of their relationship to know about the matter in controversy and if their testimony is not accepted, no higher value can be attached to the testimony of the 2nd set of witnesses.

Turning now to the oral evidence adduced by the defendant, he has examined Ikramullah (D.W.1), a zamindar of Ajodha, Mir Abdul Ghafoor (D.W.2), a muafidar, Moulvi Abdul Ghaffar (D.W.3), the present Imam of the mosque, Abdul Wahab (D.W.4) and Karamatullah (D.W.5) All these persons are sunni residents of Ajodhia and depose to having said their Juma prayers and attended the faranech (sik) in the mosque and having heard from their ancestors that the mosque was built by Babar Shah. The evidence of Abdul Ghaffur (D.W.3) shows that the office of Imam has been hereditary in his family and before

him his father and grand father were the Imans and this fact is admitted by Kalb Husain (P.W.8). The witness is also the author of a book containing the history of Ajodhia and says that he had heard from his grand father about the mosque having been built by Babar Shah. The evidence of the other witness does not deserve any particular discussion as it is manly concerned with the offering of prayers by they Sunni residents of Ajodhia, which has been admitted by Kalab Husain as well as in the oral pleadings. As regards their knowledge about the founder of the mosque, they even deny having heard the name of Mir Baqi, which appears to be untrue as will be shown later on. Moreover, if the matter rested upon oral evidence alone, I would prefer to rely upon the testimony of the Ist set of plff's witnesses as their source of knowledge was more direct.

There remains the documentary evidence produced by the parties. The plaint as well as the documents filed by the (Ex 3-13 and Exs 1 and 2/P.W.1) show that (torn).....

was granted by Nawabs of Oudh and after the annexation the British Govt. maintained the grant but committed it by granting the superior proprietary rights free of revenue in V. Bahoram pur (Sholapuri) to Mohd. Asghar and Mohd. Afzul (sons of Rajab Ali) for which a decree (Ex.12) was passed in 1870 (Ist settlement) Ex.s 2/P.W.1 and A 12 are the extracts from the register of Muafi grants in which investigations had been completed in 1860. These documents show that the original cash Nankar was granted by Babar Shah to MirBaqi, who has been described Molvi and muezzin of the Babari Mosque for his subistence and the expenes of (maintaining) the mosque. These documents also show that Rajaba Ali, who is described son in law of Baqi's grand son Hussain Ali, and his son, M. Asghar, were the holders at that time and it may be reiterated that these documents establish the pedigree up to M. Asghar beyond any doubt.

Ex.A 16 is an application given in 1866 (A.D.) by Afzal (s/o

Rajabali) who was one of the decree holders at the Ist. settlement (Ex.12) describing himself as the mutawalli, complaining against some bairagis of Ajodhia in which he stated that the musjid situate in Janananthan (i.e. the mosque in suit) had been built by Babar Shah, A.17 is a written statement by Mohd. Asghar of the year 1885 (in this court) in which too he has described Babar as the founder of the mosque and lastly in para 2 of Ex A 13 M. Zaki (in 1938) has made the same recital.

The Gazetteer of this district also contains references to this mosque at references to this mosque at Pp 173-174. It shows that according to local affirmations, Babar came to Ajodhia in 1528 A.D. and halted here for a week, during which he destroyed the Janamasthan temple and on its site built a mosque using largely the materials of the old structure. The author then goes on to remark that the record of the visit is to be found in Musalman historians but it must have occurred about the time of Babar's expedition to Bihar. The Ist. settlement report also gives the same history of this mosque and adds that according to soyders (sik) memoirs of Babar, the Emperor encamped about 5 or 6 miles from Ajodhya and stayed for a week, selting the surrounding country, though it was remarkable that his doings at Ajodhia were wanting in his own memoirs (Baharauama) (sik).

For the plff it was argued that in their applications, M.Afzul, M.Asghar, and M.Zaki had not given their source of knowledge and their admission were not binding on the plff. as the representatives of the Shia community. The rulings in 11own. 1590 and S. (sik)own 306 were cited but they are inapplicable as here it has not been shown that the admission were made under certain circumstances with some particular motive and surely these persons were in a such better position to know about the mosque than the present witnesses who lose their knowledge upon the statement of persons who in their own term (sik), did not know anything directly. It is also obvious that the

whole of the evidence on this point is hearsay and it cannot be gain said that the statements of Mohd. Afzul and M.Asghar are much more valuable than the statements of the plff's witnesses who have deposed after a dispute has arisen about the founder of the mosque.

The history of the mosque in the Gazetteer of the settlement report was also sought to be impugned (sic) on the ground that Babar's visit to Ajodhia was not mentioned in any historical work and the settlement officer was not required to make any such investigation. I am unable to accept these contentions also as the books (sic) are works (sic) of reference and admissible under S.57 of the Evidence Act. Moreover, in dealing with matters like the present when no direct evidence is available, such works based on investigation on the spot and local tradition assume great importance and unless disproved by superior evidence, must be accepted as containing a correct history of the subjects mentioned therein;-

Lastly, there are the two inscriptions in the mosque which have been reprinted in any inspection notes. These are also referred to in the Gazetteer and according to the date in the inscription on the pulpit, it was built in 923 Hijri, while according to the other it was in 935 H. corresponding with 1528 A.D.. These inscriptions were the sheet-anchor of the plff's case but I am of the opinion that they are inconclusive.

The Ist. inscription contains three in completes in Bersian and when translated runs as follows:-

“By the order of Shah Babar, whose Justice went up to the skies (i.e. was well-known), Amir (Noble) Mir Baqi, of lofty grandeur, built this restiny place for angels in 923 Hijri”.

The second inscription is more elaborate and contains in the usual gigh-flown language (sic) an enlogy of Babar and describes Mr. Baqi of Isphahan as his adviser and the builder of the mosque. This inscription no doubt supports the plff's case, because it does not say that it was by the order of Babar Shah and it only refers to the reign of

Babar but the Ist. comflet (sic) in the Ist increption (sic) near the pulpit, clearly supports the theory that Babar had ordered the building of the mosque as stated in the Gazette Returning Officer and the settlement report.

The aforementioned inference is trengthened from the fact that Babar had also made a grant for its upkeep.

Then, there is the admitted fact that within living memory the Imams and the Nuezzims in the mosque have been Sunnis, that they have been paid by mutawallis who have been shias, and that Faranech (sic), which is recited by Sunnis only and not by Shia (amongst whom it is prohibited) has been allowed by the mutwallis and paid for by them. In this connection, I may refer to Ex. A 20 which is a deed executed by H.Zaki in 1936 a agreed to pay the arrears to M. Abdul Ghuffer the Imam, and A 11, the accounts furnished by Kalab Husain (P.w.8. These facts are strongly suggestive of the fact that the founder of the mosque was a Sunni as had he been a Shia the funds for it maintenance would not have been utilised for Waqf. Act.

The notice, A 7, is also valid as it distinctly gives the cause of action.

Issues 5.

The plff. is not entitled to any relief.

Order

The suit is dismissed but for reasons given earlier, I disallow costs to the defndants, 0-20 Returning Officer-1 C.P.C.

Sd.

S.A.Ahsan,

30.3.46

Ex. A - 63
0 52150
Gopaldhar
vs
Lakshminarayana
cl. Judge
28/6

2/11

25.5.57

28/6

EX 163

2258

(26) 64

(63)

नकल रिपोर्ट मिस्टर मुहम्मद इब्राहीम साहब वकफ इन्वसपेक्टर

मुखरिका १० दिसम्बर सन् ४६ ई० बाबत मसजिद बावरी मशमूला
मिसिल वकफ नम्बर २६ वकफ मसजिद बावरी जिला फैजाबाद ।
मसजिद बावरी अयोध्या ।
सेक्रेटरी साहब - मसजिद बावरी अयोध्या के मुताविल्लियन पहले
रके बाद दीगरे मीर असगर साहब, मुहम्मद रजी साहब, मुहम्मद
अमजद अली साहब, मु० जकी साहब, कलबे हुसेन साहब थे । कलबे हुसेन
साहब साविक मुतवल्ली का इन्तकालात हो गया है लिहाजा दूसरे
मुतवल्ली का तकरूर कासवाल पैदा हुआ मौजा सहनवा मसजिद
मजकूर के लिये वकफ है मसजिद मजकूर का मुतवल्ली हमेशा मौजा
सहनवा का नम्बरदार होता चला आया है कि जो नम्बरदार
होता है वही मसजिद मजकूर का मुतवल्ली भी होता है मौजे में
दरियाफ्त से और तहकीकात से मालूम हुआ कि मौजा सहनवा के
मोजूदा नम्बरदार जनाब जौवाद हुसेन साहब हैं और यही उसूल
तहसील करते हैं और मसजिद मजकूर का इन्तजाम भी करते हैं सैयद
नबी हुसेन साहब मुखिया मौजा सहनवा में बयान दिया कि मोजूदा
नम्बरदार जनाब जौवाद हुसेन साहब हैं और यही उसूल तहसील करते
हैं और मसजिद मजकूर के मुतावल्ली भी हैं जनाब जौवाद हुसेन साहब
का बयान क्लमबंद किया गया उन्होंने एकरार किया कि मैं नम्बरदार
हूँ और मुतवल्ली हूँ उन्होंने अपना यह बयान दिया कि ७७७० ठंठे
मेहनत से तौलियत का काम अन्जाम दूंगा और मसजिद का एक पैसा
भी गबन नहीं करूंगा और बाकायदा हिसाब किताब रखूंगा और
वकफ बोर्ड की हर हुकम की तामील भी करूंगा ऐसी हालत में

मुताविल्लियन

अह

(64)

यह मालूम होता है कि जनाब जोषाद हुसेन साहब का नाम क्लोर
 मुतवल्ली दर्ज कर लिया जाय शहर फैजाबाद में यह मालूम हुआ कि हिन्दुओं
 और सिक्खों के लोफ से कोई सत्स छावण ईसा के वक्त नमाज मसजिद
 मजकूर में नहीं पढ़ता है और रात को अगर कोई मुसाफिर मसजिद में
 रह जाता है तो इसको हिन्दू वगैरह बहुत तंग करते हैं मसजिद के सेहन
 के बाहर हिन्दुओं का एक मंदिर है जहाँ बहुत से हिन्दू रहते हैं और
 जो मसजिद में मुसलमान जाता है उसको बुरा मला कहते हैं में मोंके पर
 गया और तहकीकात से मालूम हुआ कि ७ मुन्दर्जा बातें सही हैं लोगों से
 यहाँ तक कहा कि मसजिद को हिन्दुओं से काफी खतरा है कि इसकी
 दीवार वगैरह कमजोर करे मुनासिब यह मालूम होता है कि एक तहरीर
 डिप्टी कमिश्नर फैजाबाद के पास रवाना कर दिया जाय कि वह
 मुसलमानों को जो मसजिद में नमाज पढ़ने जाते हैं उनको तंग न करे
 और मसजिद मजकूर एक शाही इमारत है और इसके तहफुज का काफी
 खयाल किया जावे ।

दस्तखत हु मिस्टर मुहम्मद इब्राहीम इन्सपेक्टर आफ वक्फ बस्त अरेंजी

१०-१२-४६ नम्बर दरखास्त ५६९ तारीख दरखास्त ११-३-५६

नाम सायल मिर्जा अब्दुल बेग फैजाबाद उजरत मजमुद ^{मासुली} श्री आफ कास्ट ।

नाम ता रीख विनाय मिस्ल तैयारी २३-३-५६ तारीख हवाली ^{नेकल} मिस्ल

२३-३-५६

*Verify to be correct
 translation*

23/9/92

نقل الحدیث مسند ابی ایوب علیہ السلام ص ۱۰۹

موجود ہے۔ مسند ابی ایوب علیہ السلام (156) B

305
11

مسند ابی ایوب علیہ السلام - میں آ کر پھر سے لکھ کر ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
کتبہات کرتا تھا جس کے متعلق ذیل حالات اور واقعات معلوم ہوئے۔
جب امت مسلمہ نے مدینہ منورہ کو فتح کیا تو اس وقت تک کہ ابوریہا
جب زینب بنت ابی طالب کو لایا تو وہاں پہنچا۔ اس بات کی نسبت تمام اطراف و جوانب میں ہوشیاری بٹائی گئی تھی۔
کے چلنے والے کو لید ایک ماہ کے بعد وہاں پہنچے۔ اس وقت تک کہ ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
ناتوا۔ اس درمیان میں ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات کے متعلق
ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
مگر کتبہات و کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
مزار جو مندرجہ ذیل ہے۔ اس مزار کو کھود کر ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
جب تک کہ وہاں پہنچے۔ اس مزار کو کھود کر ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
یہاں ایک سیرنگی چھوڑا گیا ہے۔ یہاں سے پیشتر کا درخت چھوڑ کر ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
لید کتبہات و کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
درخت چھوڑ کر ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات کے متعلق
۸-۹۔ یہ سیرنگی ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات کے متعلق
تالک کی کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
کھود کر ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات کے متعلق
جب تک کہ وہاں پہنچے۔ اس مزار کو کھود کر ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
جو تالک کی کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
لید کتبہات و کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
سیرنگی کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
حفاظت میں رکھی گئی۔ ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
۱۰-۱۱۔ یہ سیرنگی ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات کے متعلق
تالک کی کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
کھود کر ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات کے متعلق
جب تک کہ وہاں پہنچے۔ اس مزار کو کھود کر ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
جو تالک کی کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
لید کتبہات و کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
سیرنگی کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
حفاظت میں رکھی گئی۔ ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات

کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات کے متعلق
جب تک کہ وہاں پہنچے۔ اس مزار کو کھود کر ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
جو تالک کی کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
لید کتبہات و کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
سیرنگی کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
حفاظت میں رکھی گئی۔ ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
۱۲-۱۳۔ یہ سیرنگی ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات کے متعلق
تالک کی کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
کھود کر ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات کے متعلق
جب تک کہ وہاں پہنچے۔ اس مزار کو کھود کر ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
جو تالک کی کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
لید کتبہات و کتبہات کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
سیرنگی کے متعلق ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات
حفاظت میں رکھی گئی۔ ابوریہا لیل کتبہات و کتبہات

H 67

2-2-82

(65)

66

नकल रिपोर्ट मिस्टर मोहम्मद अब्राहीम साहब वक्फ इन्स्पेक्टर मौरिवा
 23 दिसम्बर सन् 84 मशमूला मिस्टर फकफ 26, वक्फ मसजिद बाबरी
 जिला फैजाबाद ।

मोजूदा हालत मसजिद बाबरी अयोधिया

सेक्रेटरी साहब में 22 दिसम्बर सन् 84 की अयोधिया बागी

तहकीकात मोजूदा हालत मसजिद बाबरी व कबरस्तान आया और तमाम
 दिन तहकीकात करता रहा जिस से मुन्द्री जेल हालात और वाकैशत
 मालूम हुये । असा 3 माह का हुआ है कि ^{जवा} मममा रघुदास जन्म स्थान
 देखने अयोधिया आये थे । और यहाँ आ कर बेरागियों पुजारियों से
 जोरदार अत्काजों में कहा कि ~~जन्म~~ जन्म स्थान पर रामायण का पाठ
 होना चाहिये । इस बात की शोहरत तमाम अतराफ व जवार में ही गई
^{जवा} मममा रघुदास के चले जाने के बाद एक माह के बाद रामायण के पाठ के
 लिये हज़ारों हिन्दू और पुजारी और पीडित जमा हुये । हज़रतों पाठ
 रहा । उस दरमिस्थान में बेरागियों ने मसजिद के बाहर सामने और
 दाम्न वाले कबरस्तान का ज़्यादा तर हिस्सा लोद कर बराबर कर दिया
 और फन्डी लगा दिया और चन्द कबरों की जगह पर पत्थर रख दिया
 है रामायण के पाठ के वक्त भी पुलिस का इन्तेजाम था । मगर तब भी
 कबरों को लोद दिया ~~कन्त~~ गया । पुलिस ने 8 आदिमियों को फकड़ा
 जो बाद को जमानत पर रिहा करदिये गये ख्वाजा ^{हज़ी} रहमतुल्ला का
 मजार जो टीले पर इस कबरस्तान के करीब में है इस मजार को लोद
 कर बराबर करदिया गया और वहाँ एक बेरागी फन्डी लगा कर मुक़ीम
 हो गया है मसजिद के दरवाजे सहन पर जो पुरखा कबर है उसकी बरा
 करके बेरागी पत्थर रख कर बैठे हैं । मसजिद के कुवे के पास एक बेरागी

66
 कठोर कत्तर रस/कर बैठे हैं मसजिद के कुर्वे के पास एक बैरामी हप्पार डाल
 कर बैठे है पाट से पेशतर की मरतफा व फोडा लूटा तोडा गया मस मुसजिन
 को मारा उसके बाद मसजिद के कतवे के खोदने की कोशिश की फिर दो
 परदेशी मुसलमानों को मारा और वह काफी जखमी हुये अब मसजिद के
 बाहर दो खेमा है एक में पुलिस का-सेटे विलान और एक में बटालियन
 के सिपाही रहते हैं दोनों की मिल कर तादाद ८०६ है अब मसजिद में
 बराबर ताला बंद रहता है यानी बजुज बरोज जुमे के किसी वक्त नमाज
 और अजान नहीं होती मसजिद के ताला कुन्जी मुसलमानों के पास रहती
 है पुलिस ताला नहीं खोलने देती । ताला जुमे के रोज महज दो तीन
 घंटे के लिये खोला जाता है और इसी दौरान में मसजिद की सफाई
 वगैरह और जुमे की नमाज होती है फिर ताला बदस्तूर बंद कर दिया
 जाता है जुमे की नमाज होते वक्त बहुत शोर करते हैं और सीढ़ी से
 जब नमाजी नीचे जाते हैं तो मुसलमानान से नमाजियों पर जूता
 और डेला आता है मुसलमानान खौफ की वजह से नहीं बोलते रश्मिदास
 के दफ्तर मिस्टर लोहिया भी अयोध्या आये थे और लेक्चर वगैरह दिया
 और कहा कि कब्रों की जगह पर फूल वगैरह के दरस्तान लगा दो फिर
 में लखनऊ से कोई मिनिस्टर साहब आये थे उनसे बैरागियों ने कहा कि
 मसजिद जनम भूमि है दिला दो उन्होंने ज्यादाती करने को मना किया
 इस पर बैरागी उन पर खफा हो गये और वह पुलिस की हिफाजत में
 फैजाबाद वापस चले गये किसी दौरान में अयोध्या के दफ्तर मवन के
 मन्दिर में महन्त बडा स्थान मुसम्मी रघुबर दास , वेदान्ती जी
 नारायण दास , आचार्य जी अशरफी मवन के छ इन लोगों ने मुसलमानों
 को बुलाना चाहा मगर बजुज जहर अहमद के कोई नहीं गया हिन्दुओं

(67)

131

68

जहर से कहा कि मुसलमानों से मसजिद हमको चिता दो और तो
पाई पाई करना दुश्मन । मैं रात को अयोध्या ठहर गया सुबह को
मालूम हुआ कि धैरागी मसजिद पर जबरदस्ती कब्जा कर रहे हैं
आज जुमा भी है मैं मौके पर गया तो क्या देखता हूँ कि दस पन्द्रह
धैरागी डंडा और फरसा वगैरह लेकर मसजिद के सहन में मौजूद हैं
और ^{अधर} सब से धैरागी मसजिद के दरवाजे पर डंडा वगैरह लेकर बैठे हैं
अतराफ व जवानिब से हिन्दू जमा हो रहे हैं सिटी मजिस्ट्रेट कोतवाल
शहर और पुलिस वगैरह का काफी इन्तजाम है मुसलमानान जुमा
की नमाज पढ़ने फैजाबाद से जरूर आवेंगे न मालूम क्या ^{हसर} हो
अब मैं दरियाचार कर के लकड़ मंडी गोडों के लिये जा रहा हूँ ।

हस्ताक्षर सैयद मुहम्मद इब्राहीम । ता० २३, १२, ४६ ^{हसर} अयोध्या
तारीख २३, १२, ४६ १० ए० एम.।

द नम्बर दरखास्त ५६ तारीख दरखास्त ११, ३, ५६ नाम सायल

मिरजा अहमद बेग फैजाबाद । उजरत मजमुह ^{मासुली} ग्रीक आफ कास्ट

तारीख तैयारी ^{नकल} मिंसिल २३, ३, ५६ तारीख हवाली ^{नकल} मिंसिल २३, ३, ५६

Verifed to be
correct translation
23/9/92

In the Court of the Civil Judge, Faizabad
O.O.S. No. 1 of 1989
(Reg: Suit No.2 of 1950)

Shri Gopal Singh Visharad

.....Plaintiff

Versus

Shri Zahur Ahmad and others

.....Defendants

REPORT

Sir,

I was appointed a commissioner in the above case to prepare a site plan of the locality and building in suit on scale. Accordingly, in compliance with the order of the court, I visited the locality on 16.4.50 and again on 30.4.50 after giving due notice to the counsel of the parties, and made necessary measurements on the spot, on the first day of my visit none of the parties were present, but on the second day defendant no.1 was present with Shri Azimullah Khan and Shri Habib Ahmad Khan counsel. At about noon defendant no.1 presented an application, attached herewith, when the measurement work had already finished.

Plan No.I represents the building in suit shown by the figure ABCDEF on a larger scale than Plan no.II, which represents the building with its locality.

A perusal of Plan no.I would show that the building has got two gates, one on the east and the other on the north, known as “Hanumatdwar” and “Singhdwar” respectively. The “Hanumatdwar” is the main entrance gate to the building. At this gate there is a stone slab fixed to the ground containing the inscription “1- Shri Janma Bhumi nitya yatra,” and a big coloured picture of Shri Hanumanji is placed at the top of the gate. The arch of this entrance gate, 10' in height, rests on two black kasauti stone pillars, each 4' high, marked a and b, containing imaged of “Jai and Vijai” respectively engraved thereon. To the south of this gate on the outer wall there is engraved a stone image, 5' long, known as “Varah Bhagwan.”

The northern gate, known as “singhdwar,” 19'6” in height, has got at its top images of Garura in the middle and two lions one on

each side.

On entering the main gate there is pucca floor on the eastern and northern side of the inner building, marked by letters GHJKL DGB on the north of the eastern floor there is a neem tree, and to the south of it there is the bhandara (kitchen). Further south there is a raised pucca platform, 17' x 21' and 4' high, known as "Ram Chabutra," on which stands a small temple having idols of Ram and Janki installed therein. At the south-eastern corner E there is a joint neem-pipal tree, surrounded by a semi-circular pucca platform, on which are installed marble idols of Panchmukhi mahadev, Parbati, Ganesh and nandi.

On the northern floor there is a pucca platform, 8' x 9', called "Sita Rasoi." On this platform there is a pucca chulha with chauka and belna, made of marble, affixed by its side. To the east of the chulha there are four pairs of marble foot prints of Ram, Lakshman, Bharat & Shatrughna.

The pucca courtyard in front of the inner (main) building is enclosed by walls NHJK intercepted by iron bars with two iron bar gates at O and P as shown in the Plan no.I. At the southern end of this courtyard there are 14 stairs leading to the roof of the building, and to the south of the stairs there is a raised pucca platform 2' high, having a urinal marked U at its south-west corner.

There are three arched gates, X, Y and Z leading to the main building, which is divided into three portions, having arches at Q and R. There is a chhajja (projected roof) above the arch Y. 31

The three arches, Y, Q and R are supported on 12 black kasauti stone pillars, each 6' high, marked with letters c to n in Plan no.I. The pillars e to m have carvings of kamal flowers thereon. The pillar contains the image of Shankar Bhagwan in Tandava nritya form and another disfigured image engraved thereon. The pillar J contained the carved image of Hanumanji. The pillar n has got the image of Lord Krishna engraved thereon other pillars have also got carvings of images which are effaced.

In the central portion of the building at the north-western corner, there is a pucca platform with two stairs, on which is installed

the idol of Bal Ram (infant Ram).

At the top of the three portions of the building there are three round domes, as shown separately in Plan no.I, each on an octagonal base. There are no towers, nor is there any ghusalkhana or well in the building.

Around the building there is a pucca path known as parikrama, as shown in yellow in Plan Nos.I & II. On the west of the parikrama, the land is about 20' low, while the pucca road on the northern side is about 18' low.

Other structures found on the locality have been shown in Plan no.II at their proper places.

The land shown by letters S and T is covered by huts and dhunis of sadhus.

Adjacent to and south of the land shown by letter T, there is a raised platform, bounded by walls, 4' 6" high, with a passage towards west, known as "shankar chabutra."

The pucca well, known as "Sita koop" has got a tin shed over it, and a stone slab is fixed close to it with the inscription "3- Sita koop". To the south -west of this well there is another stone slab fixed into the ground with the inscription "4-Sumitra Bhawan". On the raised platform of Sumitra Bhawan there is a stone slab fixed to the ground, marked , carved with the image of Shesh nag.

The names of the various samadhis and other structures as noted in Plan no.II were given by sadhus and others present on the spot.

Plans nos.I and II, which form part of this report, two notices given to parties counsel and the application presented by defendant no.1 are attached herewith.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,
Shiva Shankar Lal,
Pleader
Commissioner

Faizabad.
25.5.50

کتاب الطورس

51

Handwritten notes in Persian script, including the number 59 and other illegible characters.



Copy of the original manuscript. Handwritten in cursive script.

روایاتی که در این کتاب مذکور است... این کتاب در سال ۱۲۳۳ هجری قمری... این کتاب در سال ۱۲۳۳ هجری قمری... این کتاب در سال ۱۲۳۳ هجری قمری...

موسسه که در این کتاب مذکور است... این کتاب در سال ۱۲۳۳ هجری قمری... این کتاب در سال ۱۲۳۳ هجری قمری...

این کتاب در سال ۱۲۳۳ هجری قمری... این کتاب در سال ۱۲۳۳ هجری قمری... این کتاب در سال ۱۲۳۳ هجری قمری...

Handwritten text in Urdu at the top of the page, including the number 66 and a signature.

Handwritten text in Urdu in the middle section, possibly a title or subject line.

No. of suit...	2	of 1950
Name of parties	Hajrat. Sule. Vishwanath	
Filed by	Chft. Asst. Zahid Ahmad	
Date of filing	25-3-50	
Admitted	P.M.	
Denied	by	
	Civil Judge.	

Ex-A-16
6-22/50
Hajrat Ahmad
Ch. Judge
24/8

20-8-50

Handwritten text in Urdu below the court form, including the number 130.

Denied by dept. Secy. at
Pres.

21/12/76



2 = 40/-
30.8.45

21/12/76

GA No. 27/1950
A/S

A 16

(15)

(6) 15

नकल क़ौर सनद

हबकार क्वेहरी क्लेक्टरी जिला पैजा बाद बहजलास मिस्टर बाबरक
 कारनेगी साहेब बहादुर डिप्टी कमिश्नर वाक्ये तरीस ३१ माह अगस्त
 १८६३ चिठ्ठी नम्बरी २४८२० मोरिखा २५ माह अगस्त सन ६३ ई०
 मुरसला साहेब सिंघी चीफ कमिश्नर बहादुर जरिये डाक्ट नम्बरी
 ११६ मोरिखा २८ माह अगस्त सन १८६३ ई० साहेब कमिश्नर
 बहादुर बदी मंगूमन मौसल हई कि क्लेरवण मुबलिस ३०२२३००००
 वास्ते मस्जिद जन्म-स्थान दोआम के लिये गवर्नमेन्ट ने मन्जूर किया
 था । किसी ज़मीन नबूल करीब अजोघ्या क्लिा अदाय महसूल सरकार
 क़ौर माफी दोआम ^{३०२२३०००००} कुजमा आमदनी ^{६५०} सालाना के हो दिया
 जावे । साहेब डिप्टी कमिश्नर साहेब बहादुर तक नक्शा जमीन जो
 देने के वास्ते तजवीज किये जावे ^{उस} नक्शे में सरहद साफ-साफ
 दर्ज होना चाहिये और वह नक्शा बहिसाब पैमाना तैयार होना
 चाहिये ^{वमैय} ~~धरफा~~ रिपोर्ट साहेब कमिश्नर बहादुर के भेजा जावे ।
^{हुकूम हुमा कि}
 एह बजिनसह यह रोबकार बहजलास मुन्शी ^{राय रामदयाल} साहेब हक्सटरा
 असिस्टेन्ट कमिश्नर बहादुर हस्ब तामीर व कार्यवाही करने के
 पेश ^{होवे} हई । और लिखा जावे कि नक्से मुन्शी साहेब क्लेक्टरी राय
 मिस्टर ^{बाबरक, कारनेगी} ~~बाबरक~~ साहेब बहादुर के कार्यवाही उसकी करे

ह० हाकिम
 बहजलास ^{राय} रायदयाल साहेब बहादुर
 एक्सटरा असिस्टेन्ट कमिश्नर,
 नं० ~~४०८~~ रोजनामवा ४०८

...

(16)

हुकम हुआ कि

छुठों में मिसिल साबिका के पेश होवे । अलमरकूम तारीख ६ सितम्बर
१८६३ ई० दस्तखत हाकिम ।

बाद मुलाहिजा मिसिल के दरयाफ्त हुआ कि रज्जब अली
व मोहम्मद असगर हाजिर नहीं है । और उनसे दरयाफ्त

इस अमर का जुकर है कि हस्ब मन्शा हुकूम कौई जमीन की ख्वास्त

है इसलिये ^{हुकम हुआ कि मान} १४ सितम्बर सन् १८६३ ई० को पेश होवे १२ माह

सितम्बर सन् १८६३ ई० १० हाकिम १६ सितम्बर सन् १८६३ ई०

बाद आं जां के बमुकाबिले रज्जब अली व मोहम्मद असगर वास्ते

तजवीज के पेश हुआ । नाम बुरादिमान ने कहा कि ^{जमीन} इस मशमूला

शिवाला पुरी और ^{जुमला} मन्बूर के है एवज ^{२२-१२-६}

के मिल जावे दरियाफ्त सरिश्ता से वाजे हुआ कि जमा

अदवेमोचे ^{अदवेमोचे} वहरन पुर १८३ रुपया और जमा आराजी शिवाला

पुरी १६२ रुपया जुमला ^{अदवेमोचे} २२२ रुपया ^{अदवेमोचे} तमाम है । यानी २२-१२-६

ईजाद बशरते कि दिया जाना क्ताआत मज्जूरैन का साहेब

असिस्टेन्ट कमिश्नर बहादुर व मन्बूर फरमावे । तो ^{जमीन जमा २२-१२-६} इस

के जमीन शोला पुरी ^{जुमला} इसमें मुन्तखिब हो सके ^{जुमला} और मोजावहरन पुर

मोजा मुसलमान बदस्तर रहे ^{जुमला} इसलिये +

हुकम हुआ कि ----- हमराह सुदूर हुकम बजलास साहेब असिस्टेन्ट

बहादुर हन्वाज जिला पेश होवे । १६ माह सितम्बर १८६३ ई०

दस्तखत हाकिम --- हजलास डा० के साहेब असिस्टेन्ट

साहेब हन्वाज जिला फेजाबाद ।

(17)

17

- 3 -

हुकुम हुआ कि

मुन्शी राय ^{नाम} दयाल साहेब एक्सटरा साहेब कमिश्नर साहेब बहादुर

हस्ब तजवीज ^{अपनी} निम्न ~~द्वारा~~ जमीन ^{क. ज. प.} नं. ५२-१२-६ मुस्तखिब व

मिनहां करके बकिया हर दो ~~कलन~~ ^{का नकशा} कतआत हस्ब मरशा

चिट्ठी साहेब सेक्रेटरी चीफ कमिश्नर बहादुर मुरतब फरमा कर

दरसाल दरसाल फरमाये । तब रिपोर्ट बाबुआक्टइन मेजा जावेगा

----- मुकदमें में डाकेट ताकीदे आज बराह मेहरबानी जल्द

दरसाल फरमाये । २८ सितम्बर सन् ६३ ई० ।

इजलास ^{नाम} जल्लापुर मुन्शी राय दयाल साहेब बहादुर दो हाकिम

आज पेश हुआ और सायल से पूछा गया कि उजरत अमीन तुम

दाखिल करोगे । बयान किया कि हम दाखिला करेंगे । इसलिए

हुकुम कि हुआ कि एक अमीन उजरत पर मुकरी हो कि उसके मारफत

नक्शा ~~बनान~~ पूर बतौर हल्का हद बस्त और नक्शा शिवाला पुरी

किस्तुवशसाफ व तैयार कराया जाये । और जो जमीन नं. ५२-१२-६

सरकारी हल्का शोलापुरी में रहेगी ^{रंग जस्ट से} जमीन ~~अलग है~~ ^{रंग से}

उसमें वास्ते ^{शिनारगते} नकल सरकार पुर कर देवे । अलमरकूम तारीख

३० सितम्बर सन् १८६३ ई० दो हाकिम लखन प्रसाद नकलनवीस

*Verified to be correct
transliteration*

23/9/92

اسٹامپ ہشت آند
 نقل بطور سند
 صفحہ اول
 روہکار پچھری کلکٹری ضلع فیض آباد باجلاس مسٹر باہرک کارنیگی صاحب بہادر ڈپٹی کمشنر واقع تاریخ ۳۱ اگست ۱۸۶۳ء پیسوی چٹھی نمبری ۲۲۸۲ مورخہ ۲۵ ماہ اگست ۱۸۶۳ء مرسلہ صاحب سکریٹری چیف کمشنر بہادر ڈیویڈ ریوڈ ڈاکٹ نمبری ۱۱۰۶ مورخہ ۲۸ ماہ اگست ۱۸۶۳ء صاحب کمشنر بہادر بدیں مضمون موصل ہوئی کہ بیویض مبلغ ۳۰۲/۳/۶ جو واسطے مسجد جنم استھان دوام کے لئے کورنمنٹ نے منظور کیا تھا کسی زمین زول قریب وجود صیلا ادا کی حصول سرکار بطور معافی دوام جمع آمدنی مبلغ ۳۰۲/۳/۶ سالانہ کی ہو دیا جاوے صاحب ڈپٹی کمشنر بہادر یک نقش زمین جو دینے کے واسطے تجویز کئے جاویں گے اس نقش میں سرحد صاف صاف درج ہونا چاہے اور وہ نقش بحساب پیمانہ طیار ہونا چاہئے معہ ایک رپورٹ صاحب کمشنر بہادر کے بھیجا جاوے۔

حکم ہوا کہ
 تجلہ روہکار باجلاس منشی رائے رام دیال صاحب اکسٹرا اسٹنٹ کمشنر بہادر رجعت تعمیل و کارروائی کے پیش ہووے اور لکھا جاوے کہ منشی صاحب بافتاق رائے مسٹر ڈاکٹر بیگ صاحب بہادر کے کارروائی اس کی کریں فقط۔
 دستخط حاکم

باجلاس رائے رام دیال صاحب بہادر اکسٹرا اسٹنٹ کمشنر بہادر تحریر روزنامہ ۲۰۸
 حکم ہوا کہ
 معہ مسل سابقہ کے پیش ہووی المرقوم تاریخ ۹ ستمبر ۱۸۶۳ء دستخط حاکم
 بعد ملاحظہ مسل کے دریافت ہوا کہ رجب علی محمد اصغر حاضر نہیں ہیں اور ان سے دریافت اس امر کا ضرور ہے کہ حسب منشا، حکم کون زمین کی خواہش ہے اس لئے

حکم ہوا کہ
 تاریخ ۱۲ ستمبر سن الیہ کو پیش ہووے ۱۲ ماہ ستمبر ۱۸۶۳ء دستخط حاکم
 از آنجا کہ بمقابلہ رجب علی محمد اصغر واسطے تجویز کے پیش ہوا نامبر دکان نے کہا کہ زمین مشمولہ شیوالہ پوری اور بھورن پور جو متعلق زول کے ہیں عیوض ۳۰۲/۳/۶ کے جاوے دریافت سرشتہ سے واضح ہوا کہ جمع ادنی موضع بھورن پور /- ۱۹۳ روپیہ اور جمع آراضی شیوالہ پوری ۶۲ روپیہ جملہ ۳۵۵ روپیہ سال تمام ہے یعنی ۵۲/۱۲ ایزادی بشرطیکہ دیا جانا قطعاً مذکورین کا صاحب اسٹنٹ کمشنر بہادر منظور فرمادیں بعد میں جمع ۵۲/۱۲ کے زمین شیوالہ پوری سے منتخب ہو سکتی ہے اور موضع بھورن پور موضع سالم بدستور رہے اسلئے۔
 حکم ہوا کہ بمراد صدور حکم باجلاس صاحب اسٹنٹ کمشنر بہادر انچارج ضلع پیش ہووے۔
 ۱۶ ماہ ستمبر ۱۸۶۳ء دستخط حاکم باجلاس ڈاکٹر بیگ صاحب اسٹنٹ کمشنر بہادر انچارج ضلع فیض آباد
 حکم ہوا کہ

منشی رام دیال صاحب اکسٹرا اسٹنٹ کمشنر بہادر حسب تجویز اپنی زمین جمع ۵۲/۱۲/۶ منتخب و منہا کر کے بقیہ ہر دو قطعاً کا نقش حسب منشا نے چٹھی صاحب سکریٹری چیف کمشنر بہادر مرتت فرما کر ارسال فرمادیں تب رپورٹ باضابطہ بھیجا جاوے گا..... دریں مقدمہ میں ڈاکٹ تاکید ہے آج براہ مہربانی جلد ارسال فرمادیں۔ ۲۸ ستمبر ۶۳ء دستخط حاکم
 باجلاس منشی رام دیال صاحب بہادر

آج پیش ہوا اور سائل سے پوچھا گیا کہ اجرت ائین تم داخل کرو گے بیان کیا کہ ہم داخل کریں گے اس لئے۔ حکم ہوا کہ
 ایک ائین اجرت پر مقرر ہو کے اس کی معرفت نقش بھورن پور بطور حلقہ حد بست اور نقشہ شعلہ پوری کشتوار صاف و طیار کر لیا جاوے اور جو زمین جمع ۵۲/۱۲/۶ سرکاری حلقہ شعلہ پوری میں رہے گی ائین رنگ زر سے اس میں واسطے شناخت زولی سرکار پر کر دیوے۔ المرقوم تاریخ ۲۰ ستمبر ۱۸۶۳ء
 دستخط حاکم بقلم لچھن پر ساندل نقل نویس

नकल बतौर सनद

सफहा नुजूल

स्टाम्प मालयती 8 आना

रोबकार कचेहरी कलेकट्टी जिला फैजाबाद बइजलास मिस्टर बाबरक कारलेगी साहब बहादुर डिप्टी कमिशनर वाके तारीख 31 माह अगस्त 1863ई0 चिट्ठी नम्बरी 2482 मोर्खा 25 अगस्त 1863ई0 मुर्सला साहब सिकरेट्टी चीफ कमिशनर बहादुर ज़रिये डाक्ट नम्बरी 1106 मोर्खा 28 माह अगस्त 1863ई0 साहब कमिशनर बहादुर बदीं मजमून मौसूल हुई कि बइवज मुबलिग 302/3/6 जो वास्ते मस्जिद जनम स्थान दवाम के लिये गौर्नमेंट ने मंजूर किया था किसी अमीन नुजूल करीब अजोध्या बिला अदाई महसूल सरकार बतौर मआफी दवाम बजमीय आमदनी मुबलिग 302/3/6 सालाना की हो दिया जावे साहब डिप्टी कमिशनर बहादुर यक नकशा जमीन जो देने के वास्ते तजवीज किये जावे भेजें उस नकशे में सरहद साफ साफ दर्ज होना चाहिये और वह नकशा बहिसाब पैमाना तय्यार होना चाहिये व मय यक रिपोर्ट साहब कमिशनर बाहदर के भेजा जावे।

हुकम हुआ कि

बजिसिही ब-रोबकार बइजलास मुंशी राय राम दयाल साहब एक्स्ट्रा असिस्टंट कमिशनर बहादुर जिहत तामील व कार्रवाई के पेश होवे और लिखा जावे कि मुंशी साहब बा इत्तफाक राय मिस्टर डा0 हेग साहब बहादुर के कार्रवाई इसकी करें फकत

दस्तखत हाकिम

इजलास राय राम दयाल साहब बहादुर एक्स्ट्रा असिस्टंट कमिशनर तहरीर व रकमहु 408

हुकम हुआ कि

मय मिसिल साबका के पेश होवे अलमरकूम तारीख 9 सितम्बर 1863ई0

दस्तखत हाकिम

बाद मुलाहज़ा मिसिल के दरयाफ्त हुआ कि रजब अली व मोहम्मद असगर हाजिर नहीं है और उनसे दरयाफ्त इस अम्र का जरूर है कि हस्ब मंशा हुकम कौन ज़मीन की ख्वाहिश है इस लिये

बतारीख 14 सितम्बर सन इलैह को पेश होवे 12 माह सितम्बर 1863ई0 दस्तखत हाकिम 16 सितम्बर 1863ई0

अज़ आंजा कि बमुकाबले रजब अली व मोहम्मद असगर वास्ते तजवीज के पेश हुआ नामबर्दगान ने कहा कि ज़मीन मशमूला शिवाला पुरी और भूरनपुर जो मुताल्लिक नुजूल की हैं इवज 302/03 आना के मिलजावे दरयाफ्त सर रिश्ता से वाजेह हुआ कि जमा अदाई मौजा भूरनपुर 193 रूपया और जमा आराजी शिवालापुरी 162 रूपया जुमला 355रूपया साल तमाम है यानी 52/012 ईरादी बशर्त यह कि दिया जाना कितात मजकूरीन का साहब असिस्टंट कमिशनर बहादुर मंजूर फरमावें बाद जमई 52/12. 5 की जमीन शिवालापुरी से मुंतखब हो सकती हैं और मौजा भूरनपुर मौजा सालिम बदस्तूर रहे इस लिये

हुकम हुआ कि

बमुराद सुदूरे हुक्म बइजलास साहब असिस्टंट कमिशनर बहादुर इंचार्ज जिला पेश होवे। 16 माह सितम्बर 1863ई0 दस्तखत हाकिम इजलास डा0 हेग साहब असिस्टंट कमिशनर बहादुर इंचार्ज जिला फ़ैजाबाद

हुक्म हुआ कि

मुंशी राम दयाल साहब एक्स्ट्रा असिस्टंट कमिशनर बहादुर हस्ब तजवीज़ अपने अमीन जमा 52/12/6 मुंतखब व मिनहा करके बकिया हर दो कितात का नकशा हस्ब मंशा चिट्ठी साहब सिकरेट्री चीफ बकिशनर बहादुर मुरत्तब फरमाकर इरसाल फरमादे तब रिपोर्ट बाज़ाब्ता भेजा जावेगा दरिं मुकदमा में दाक्ट ताकीद है आज बराह महरबानी जल्द इरसाल फरमावे 28 सितम्बर सन 63ई0 दस्तखत हाकिम

इजलास मुंशी राम दयाल साहब बहादुर

आज पेश हुआ और सायल से पूछा गया कि उजरत अमीन तुम दाखिल करोगे बयान किया कि हम दाखिल करेंगे इस लिये

हुक्म हुआ कि

एक अमीन उजरत पर मुकरर होके उसकी मार्फत नकशा भूरनपुर बतौर हलका हद बस्त और नकशा शोलापुरी किश्तवार साफ व तय्यार कराया जावे और जो अमीन जमा 52/12/6 सरकारी हलका शोलापुरी में रहेगी अमीन रंग जाविये उसमें वास्ते शिनाख्त नुजूल सरकार पुर करदेवे अलमरकूम तारीख 30 सितम्बर 1863ई0

दस्तखत हाकिम बकलम लक्षमन प्रसाद नकल नवीस

Copy as document

Safha Nuzul
Stamp Value 8 Anna

Before the Katchehri Collectorate, District Faizabad, in the Court of Mr. Babrak Carnegi Deputy Commissioner on 31st August, 1863, Docket No. 2482, dated August 25, 1863 for Saheb Commissioner Bahadur, written by the Secretary to Chief Commissioner, received by post vide no. 116 dated August 28, 1863, with the undermentioned text. That for Rs. 302-3-6 the government had sanctioned for Masjid Janam Sthan a piece of land of Nuzul, for ever. Some land of Nuzul near Ayodhya be given, without paying Govt. revenue as Maafi for ever with all its income Rs. 302/3/6 per annum. The Deputy Commissioner was to send a map showing the land proposed to be given. In such a map contours and four corners should be clearly mentioned with correct measurement and be sent alongwith the report of the Commissioner. Order, Put up before the Court of Munshi Rai Ram Dayal Saheb Extra Assistant Commissioner Bahadur. Put up with previous file dated September 9, 1863 Sd/ officer. After perusal of the file, it was known that Rajab Ali and Mohd. Asghar are not present. It has to be enquired from them as to which land is desired to be given. Order : Put up on 16th September 1863.

Whereas before Rajab Ali and Mohd. Asghar, the proposal (Tajweez) was presented. The Naambardagaan told that land included in Shola Puri and Bhooranpur related to Nuzul may be given to us for 302/3 1/2. By inquiries from Sar Rishta it was cleared that Jama Adai Mauza Bhooranpur Rs. 193 and Jama Arazi Shivalapuri Rs. 162, total Rs. 355/- is for the whole year i.e. 52/12 1/2 Iradi with the condition that giving of the above mentioned plots of land are approved

by the Assistant Commissioner Saheb Bahadur. After depositing Jamai 52/12.5, plot may be selected from Shivalapuri and total Mauza Bhooranpur may remain intact. Therefore it is ordered. Bamurad Sudoore order of the Court of Saheb Assistant Commissioner Bahadur District Incharge, be put up. Dated September 16, 1863 Sd/- Magistrate Ijlas Dr. Haque Saaheb Extra Assistant Commissioner Bahadur Incharge District Faizabzd. It is ordered that Munshi Ram Dayal Saheb Extra Assistant Commissioner Bahadur may forward a map of the two plots as per desire mentioned in the letter of the Secretary, Chief Commissioner. That as per his proposal, total land 52/12/6 may be selected and after making adjustments, for both the plots as mentioned in the letter of the Secretary to the Chief Commissioner, a map may kindly be prepared and forwarded. Then a proper report will be sent in the meantime it is instructed that the same may please be sent urgently today. Dated September 28, 1863. Ijlas Munshi Ram Dayal Saheb Bahadur. Presented today and the petitioner was asked whether he was ready to pay the prices of the land, he replied in affirmative. So it was ordered that an Amin on wages may be deputed, through whom a map of Bhooranpur as Halka Had Bast and map of Sholapuri Kishtwar and clear may be prepared and the land Jama 52/12/6 of the govt. will remain in Halka Sholapuri. The Amin will add yellow colours to it, for identifying Nuzul Sarkar. Dated September 30, 1863 Sd/- Magistrate. Written by Lakshman Prasad Naqal Naweess.

۵/مارچ ۱۸۶۶ء مطابق چیت بدی چوتھ سبت ۱۹۲۲ بروز دوشنبہ محمد اصغر..... معرفت خود یک قطعہ قیمتی ۸/۸ نہ مقام محلہ اسماعیل گنج ضلع فیض آباد واسطے سوال کے فروخت کیا۔ دستخط غیر واضح

۶/مارچ ۱۸۶۶ء کو درخواست محمد اصغر نے گزاری چنانچہ ۹ کو نقل طیار ہوئی ۱۰ کو محمد اصغر حاضر آئے نقل دی گئی فقط۔ دستخط غیر واضح

بوجب حکم ۴ اکتوبر ۱۸۶۷ء کو بعد درخواست نقل کی شہجہ کانڈ..... دستخط غیر واضح ۳۰ اکتوبر ۱۸۶۷ء

الف نمبری ۲۹ ۱۹۳۵ء شیعہ سنٹرل بورڈ نام سنی سنٹرل بورڈ مدغلہ وکیل مدعی تاریخ ۱۰/۱۰/۳۵ء

P-186

नं० 170

5 मार्च 1866 मुताबिक चैत बदी चौथ सम्बत 1922 रोज दोशंबा हाथ मोहम्मद

असगर मार्फत खुद एक किता कीमती 8 आना मकाम मुहल्ला

इसमाईल गंज जिला फ़ैजाबाद वास्ते सवाल के फरोख्त किया। ह० अपठनीय

6 मार्च 1866 ई० को दरखास्त मोहम्मद असगर ने गुजारी चुनान्चे 9 को नकल

तय्यार हुई 10 को मोहम्मद असगर हाज़िर आये नकल दी गई फकत।

ह० अपठनीय

बमौजिब हुक्म 4 अक्टूबर 1867 को बाद दरखास्त नकल की ठप्पा कागज़.....

ह० अपठनीय 30 अक्टूबर 1867ई०

अलिफ नम्बरी 29 सन 1945 शिया सेन्द्रल बोर्ड बनाम सुन्नी सेन्द्रल बोर्ड

मुदखला वकील मुद्दई बतारीख 1/10/45 ई०

March 5, 1866 corresponding to Chait Badi Chauth Sambat 1922 sold through self to Mohammad Asghar. Mohalla a stamp valued at 8 Anna Mukam Mohalla Issmail Ganj, District Faizabad for Swal. Sd/- Illegible.

March 6, 1866 Mohd. Asghar presented the application. So on 9th copy was prepared. On 10th Mohammad Asghar appeared. Copy handed over. Sd/- Illegible.

As per orders on October 4, 1867 copy issued Sd/- Illegible, October 30, 1867.

Alif No. 29, 1945 Shia Central Board Vs. Sunni Central Board filed by the Counsel of the petitioner 01.10.45.

Handwritten text in Urdu at the top of the document, including a date and names.

Stamp: No of suit... 2... of 1950. Name of parties... Plaintiff: Zahur Ahmad & Co. Defendant: Zahur Ahmad & Co. Dated by... Civil Judge.

Ex-A-17
6.5.50
Zahur Ahmad
Civil Judge
26/5/50



Handwritten text in Urdu, possibly a signature or a note, with a date 21/1/56.

File: 21/1/56

Demanded by counsel
Present

27/1960

A 17

18

नकल बीरे सनद

7

18

रोपकार क्वेहरी क्वेटरी फेजाबाद बजलास बाब मिस्टर बाबरीक
कारनेगी साहब बहादुर डिप्टी कमिश्नर वाकिया १३ सितम्बर सन
१८६५ ई० डाक्ट नम्बरी २१०५ मोरिसा ६ सितम्बर सन १८६५ मुस्लि
मुसिला साहब फाहने-शियल कमिश्नर बहादुर बगरिये डाक्ट न
६६७ मोरिसा ६ सितम्बरसन १८६५ ई० साहब कमिश्नर बहादुर
बदी
जदीद मजूम सादिर हुआ कि साहब डिप्टी कमिश्नर बहादुर
ने जो जमीन वास्ते माकडा मस्जिद जन्म-स्थान के पसन्द किया
हे मन्जूर की गई लिहाना

हुकुम हुआ हे कि

रोपकार हाजा खिदमत में मुन्शी नन्द किशोर साहब बहादुर रक्सटरा
रसिस्टैन्ट कमिश्नर ^{बदी नन्दार} फाहल मुसद पेश होवे ^{कि} बहुत जल्द साथ सेहत
के जमीन हवाले ^{याकिहा} ^{मुथाकवाकरे} फक्त दस्तास्ता हाकिम बजलास
मुन्शी नन्द किशोर साहब बहादुर ।

हुकुम हुआ कि

जो जमीन माकडा में तहरीर की गयी हे उस पर दखल दे दिया
जावे । और दखल नामा लिया जावे अलमरकूम १४ सितम्बर १८६५
बख्त दस्तास्ता हाकिम ।

जनावे आली दाम हश्मत ह

जमीन जमा ३०२ रू साढे ३ आने हस्ब जेल तजवीज हुई हे ।

बखुरन पूर मोडा ^{मुसलमान} आराजी शोलापुरी मार सन १२७३.

اسٹامپ ہشت آنہ نقل بطور سند صفحہ نزول

رویکار کچہری کلکٹری ضلع فیض آباد جا اس مسٹر بابرک کارنیگی صاحب بہادر ڈپٹی کمشنر واقعہ ۱۳ ستمبر ۱۸۶۵ء
ڈاکٹ نمبر ۲۱۰۵ مورخہ ۶ ستمبر ۱۸۶۵ء مرسلہ صاحب فنانشل کمشنر بہادر بڈ ریو ڈاکٹ نمبر ۸۶۷ مورخہ ۹ ستمبر سن الیہ صاحب کمشنر بہادر بدیں مضمون
صادر ہوا کہ صاحب ڈپٹی کمشنر بہادر نے جو زمین واسطے معاوضہ مسجد جنم استخان کے پسند کیا ہے منظور کی گئی لہذا
حکم ہوا کہ

رویکار لہذا خدمت میں منشی نذک شورش صاحب بہادر اکسٹرا اسٹنٹ کمشنر بایں مراد پیش ہووے کہ بہت جلد ساتھ منتخب کی زمین..... یا بندہ معاوضہ کی
کریں فقط

دستخط حاکم

اجا اس منشی نذک شورش صاحب بہادر سے

حکم ہوا کہ

جو زمین معاوضہ میں تجویز کی گئی ہے اس پر دخل..... جاوے اور دخل نامہ لیا جاوے المرقوم ۱۲ ستمبر ۱۸۶۵ء دستخط حاکم

جناب عالی متعالی دام شمسہ

زمین جمع ۳۰۲/۰۳ حسب ذیل تجویز ہوئی ہے۔ بھورن پور موضع مسلم۔ /۱۹۳ آراضی شعلہ پوری ۱۰۹/۰۳ انگر در ۳۳ فصلی مبلغ /۷ جمع
موضع بھورن پور ریز ادہو کے پٹہ دیا گیا ہے یعنی بجائے /۱۹۳ مبلغ دو سو روپیہ کا پٹہ ہوا چنانچہ رپورٹ ۶ ستمبر ۱۸۶۵ء میں مفصل عرض رکھا لہذا قبل
دخل دہانی کے مکرر عرض رسا ہوں کہ بلا ناظرین منشی جمع زمین تجویز شدہ سابقہ پر دخل دلا لیا جاوے یا جس طرح سے کہ ارشاد ہو معاوضہ ۱۳ ستمبر ۱۸۵۰ء
العہد: کمترین بھولا نا تھ

اجا اس منشی نذک شورش صاحب اکسٹرا اسٹنٹ کمشنر بہادر

معلوم ہوتا ہے کہ وقت تجویز معاوضہ جمع یہ ہے کہ موضع بھورن پور کے مبلغ /۱۹۳ ہے کہ /۱۲۷۲ میں وہی جمع قائم رہی اب وقت بندوبست ۱۲۷۳
کی جمع مذکور میں سات روپیہ اضافہ ہو کر دو سو روپیہ کا پٹہ قبولیت ہوا اس صورت میں اب ہنگام تجویز معاوضہ و بندوبست حال سے سات روپیہ کا
ایضافہ ہے جب کہ نقش معاوضہ مرتب ہو کر واسطے منظور مرسل ہوا تھا تو جمع /۱۹۳ تھی تو اب تعمیل صدور منظوری جو ایضافہ قلیل سات روپیہ کی فیصدی
ڈھائی روپیہ ہوتا ہے ہو گیا ہے چنداں..... لائق ناظرین مگر اطلاع اس کی ضرور ہے۔

اس واسطے حکم ہے کہ

اطلاعاً یہ کاغذ کھنڈہ جناب صاحب ڈپٹی کمشنر بہادر..... پیش ہووے کہ بلا ناظرین منشی دخل دلا لیا جاوے یا بقدر اس کی مجرای زمین شولہ پوری سے کری
جاوی ۱۶ ستمبر ۱۸۶۵ء دستخط حاکم کچھن پر سا نقل نویس

नकल बतौर सनद

सफहा नुजूल

स्टाम्प मालयती 8 आना

रोबकार कचेहरी कलेकट्टी जिला फैजाबाद बइजलास मिस्टर बाबरक कारनेगी

साहब बहादुर डिप्टी कमिशनर वाके तारीख 13 सितम्बर 1865ई0

दाक्ट म्बरी 2105 मोर्खा 6 सितम्बर 1865ई0 मुर्सला साहब फनानशल कमिशनर

बहादुर बजरिय दाक्ट नम्बर 867 मोर्खा 9 सितम्बर सन इलैह साहब कमिशनर

बहादुर बदीं मजमून सादिर हुआ कि साहब डिप्टी कमिशनर बहादुर ने जो ज़मीन

वास्ते मुआवजा मस्जिद जनम स्थान के पसन्द किया है मंजूर की गई लिहाजा

हुक्म हुआ कि

रोबकार हाजा खिदमत में मुंशी नन्द किशोर साहब बहादुर एस्ट्रा अस्सिटंट

कमिशनर बई मुराद पेश होवे कि बहुत जल्द साथ मुंतख़ब की ज़मीन

याबिन्दा मुआवज़ा की करें फकत

दस्तख़त हाकिम

इजलास मुंशी नन्द किशोर साहब बहादुर से

हुक्म हुआ कि

जो ज़मीन मुआवजे में तजवीज की गई है उसपर दखल..... और दखलनामा

लिया जावे अल-मरकूम 14 सितम्बर 1865ई0

दस्तख़त हाकिम

जनाब आली दामा हशमतहु

ज़मीन जमा 302/03 हस्ब ज़ैल तजवीज हुई है भूरनपुर मौजा मुसल्लम 193

रूपया आराजी शोलापुरी 109/030 रूपया मगर दर सन 1273ई0 फसली मुबलिग

7रूपया जमा मौजा भूरनपुर ईज़ाद होके पट्टा दिया गया है यानी तामी 193

मुबलिग 200 रूपया का पट्टा हुआ चुनानचे रिपोर्ट 6 सितम्बर 1965ई0 में

मुफस्सल अर्ज रखा लिहाजा कब्ल दखल दहानी के मुर्कर अर्ज रसां हूं कि बिला

लिहाज बेशी जमा ज़मीन तजवीज़शुदा साबका पर दखल दिलाया जावे या जिस

तरह से कि इरशाद हो मारुज़ा 14 सितम्बर 1865ई0

अलअब्द कमतरीन भोला नाथ

इजलास मुंशी नन्द किशोर साहब एक्स्ट्रा असिस्टंट कमिशनर बहादुर

मालूम होता है कि वक्त तजवीज़ मुआवज़ा जमा यह कि मौजा भूरनपुर के

मुबलिंग 193/— है कि 1271 व 1272 में वही जमा कायम रही अब वक्त

बन्दोबस्त 1273 की जमा मजकूर में सात रूपया इजाफा होकर दो सौ रूपया का

पट्टा कुबूलियत हुआ इस सूरत में अब हंगाम तजवीज़ मुआवजा बन्दोबस्त हाल से

सात रूपया का इजाफा है जबकि नकशा मुआवजा मुरत्तब होकर वास्ते मंजूरी

मुरसल हुआ था तो जमा 193/— थी तो अब तामील सुदूर मंजूरी जो इजाफा

कलील सात रूपया कि फीसदी ढाई रूपया होता है होगया है लायक

लिहाज नहीं मगर इत्तला इसकी ज़रूर है

इस वास्ते हुक्म है कि

इत्तलाअन हिबा कागज बहुजूर जनाब साहब डिप्टी कमिशनर बहादुर पेश

होवे कि बिला लिहाज इजाफा दखल दिलाया जावे या बकद्र इसके मुजराई

जमीन शोला पूरी करी जावे 16 सितम्बर 1865ई0

दस्तखत हाकिम

लक्षमन प्रसाद नकल नवीस

Copy as Sanad

Before Kutchehary Collectorate District Faizabad, Ijlas Mr. Babrak Carnegi Saheb Bahadur, Deputy Commissioner, on September 13, 1865 letter no. 2105 through Dak No. 867, dated September 9, instant with the following text. That the piece of land which the Deputy Commissioner has selected for Masjid Janam Sthan, has been approved. Therefore it is ordered that this application, be put up before Munshi Nand Kishore Saheb Bahadur Extra Assistant Magistrate with the request that it should be presented immediately along with (map of) the land selected as compensation Yabinda Muawza. Sd/- Magistrate. Order of the Ijlas of Munshi Nand Kishore that the land selected as compensation, be given in possession and Dakhalnama be taken. Dated September 14, 1865 Sd/- Magistrate. Janab Aali Dam-e-Hashmatahu. Land Jama 302/35 as per following proposal, has been proposed I Mauza Bhooranpur Mauza Musallam Rs. 193 Aarazi Shola Puri Rs. 109/03, 1273 Fasli with an increase of Rs. 7/- has been approved. Jama Mauza Bhooranpur after being Ezad Patta has been issued i.e. patta has been issued, for Rs. 200 in place of Rs. 193. Therefore report dated September 6, 1865 contains detailed entries. However before giving the possession, without depositing additional amount for Jama land proposed earlier, may be given in possession of the applicant as ordered dated September 12, 1865. Sd/-Bhola Nath.

Ijalam Munshi Nand Kishore Saheb Extra Assistant Commissioner. It appears that compensation has been deposited. That for Bhooranpur it was Rs. 193 which continued till now. Now at the time of bandobast 1273 F, Rs. 7/- has been

increased. In this way the patta for Rs. 200/- has been accepted. While, the map of compensation was prepared for approval, the Jama was Rs. 193. Now by Tameel Sudoor acceptance the meager increase of Rs. 7/- which comes to 2.5 percent, is not a big amount to be mentioned but information regarding this is necessary. Therefore it is ordered that this paper be put up before the Deputy Commissioner and without considering the increase. Possession may be given and after that adjustment may be made from Shola Puri land. Sd/- Magistrate September 16, 1865. Sd/- Magistrate. Written by Lakshman Prasad, Naqal Naweess.

۵ مارچ ۱۸۶۶ء مطابق چیت بدی چوتھ سببت ۱۹۲۲ روز دوشنبہ ہاتھ محمد اصغر تعلقہ ار معرفت خود یک قطعہ قیمتی ۸ آنہ
مقام محلہ اسماعیل گنج ضلع فیض آباد واسطے سوال کے فروخت کیا۔ دستخط غیر واضح

بموجب حکم ۳۰ اکتوبر ۱۸۶۷ء کو بعد درخواست نقل شہید کاغذ درست تحریر ہوئی۔ دستخط غیر واضح ۳۰ اکتوبر ۱۸۶۷ء

الف نمبر ۲۹ ۲۵ء شیعہ سینٹرل بورڈ، نام سنی سنٹرل بورڈ مدخلہ وکیل مدعی تاریخ ۱۰/۱۰/۲۵ء

नं0 3171

5 मार्च 1866 मुताबिक चैत बदी चौथ सम्बत 1922 रोज दाशम्बा हाथ मोहम्मद

असगर मार्फत खुद एक किता कीमती 8 आना मकाम मुहल्ला

इसमाईल गंज जिला फैजाबाद के वास्ते सवाल के फरोख्त किया।

ह0 अपठनीय

बमौजिब हुक्म 30 अक्टूबर 1867 को बाद दरखास्त नकल ठप्पा कागज़ के

दुरूस्त तहरीर हुई।

ह0 अपठनीय

30 अक्टूबर 67

अलिफ नम्बरी 29 सन 45 शिया सेन्द्रल बोर्ड बनाम सुन्नी सेन्द्रल बोर्ड मुदखला

वकील मुद्दई बतारीख़ 1/10/45

Today, the 5th of March, 1866 corresponding to Chait Badi Chauth Sambat 1922, Monday. Mohammad Asghar through self, stamp -8/-. Place Mohalla Ismail Ganj Distt. Faizabad sold for Sawaal. Sd/- illegible.

As per order dated October 30, 1867. After an application for copy of original patta, paper for writing. Sd/-illegible. October 30, 1867.

Alif Numbari 29, 45 Shia Central Board Vs. Sunni Central Board. Filed by the Counsel of the applicant dated 1.10.45.

Handwritten text in Urdu script at the top of the page.



No of suit	2	of 1930
Name of parties	Gopal Singh	
Filed by	Chait. No. 1. Zohari Ahmad + etc	
Date of filing	2.5.30	
Admitted by	Piff.	
Denied by	Deit.	
Civil Judge.		

Er. A-10
Gopal Singh
Zohari Ahmad

Chait. No. 1
26/10

Deit. by
26-B-66

Handwritten text in Urdu script, partially obscured by a stamp.

21/12/36

General admnistr
off counsel
1/1/45

50
27/10/58
A10
8

नकल क्लोर सन्द सीगा नजूल

नन्द
बहजूर मुन्शी किशोर साहेब बहादुर रक्सटरा असिस्टेंट कमिश्नर
जनाबे आली दामे हशमताह ।

तामील हुकुम रकम जुदा ५ सितम्बर सन् १८६५ ई० दरबाब दिना
जाने नगद व जमीन खतीब मस्जिद जन्म-स्थान को अर्ज रसा हू ।
हाली ^{दिये जाने} ~~दि~~ जुरे नगद ^{नीज} और यह कि अब किस साल से सायल को मिलना
चाहिये । मुफससल रिपोर्ट इकाउन्टेन्ट से दरयाफत . बन्दगाने आली ~~होगा~~
और सुरत रक्काना यह हे कि क्लारीस १६ सितम्बर सन् १८६३
बहरत पूर मौजा मुसलम जमा १६३ ~~जमा~~ . और जमीन जमा १०६ हू
साढे ३ आना हल्का आराजी शोला पुरी वाक्या साहेब गंज से
हमागी ~~१८२६~~ के आराजी तजवीज हो गये । २३ दिसम्बर सन् १८२४
ई० रिपोर्ट बहजूर साहेब कमिश्नर साहेब भेजा गया कि यह सब
कायवाही मिस्त में मौजूद है । और वह सन् १२७३ फ० पट्टा
मौजा ~~बहरत~~ पूर ~~जमा~~ २०५६ और पट्टा आराजियात शोलापुरी
मुाबिक जमा १२७२ फ० तकसीम हो गयी - मारुजा ६ सितम्बर
१८६५ - ^{कमतरान मोला नाथ} हजलास मुन्शी नन्द किशोर साहेब रक्सटरा असिस्टेंट
कमिश्नर ^{इमरोजा} चूकि हस्व ~~बहजूर~~ रोबकार अलहदा हुकुम दलल देहानी
का दिया गया । इसलिस - हुकुम हुआ कि यह रिपोर्ट शामिल ~~निश्चिन~~
के रहे । अलमरकूम १४ सितम्बर सन् १८६५ ई० द० हाकिम
हजलास मिस्टर बाबरक कारनेगी साहेब बहादुर ।
बाद मुलाहिजा हुकुम मुन्शी नन्द किशोर साहेब बहादुर के --

ब लिहाजा हजाफा के फिलफनेल अउठ याबिन्दा मावजे को
 दखल दिया जावे । बजिन्सहूबजलास मुन्शी नन्दकिशोर साहब
 पेश हो कि बराहमेहरवानी बिला लिहाजा रिपोर्ट दारोगा
 के कि शायद अब भी कोई रिपोर्ट न देवे याबिन्दा मावजा को
 दखल दिला जावे जो एक सवाल सायल बाकत पाने नगदी जो
 साबिक से मुकर्र था सामल मिस्का की है उसकी बाकत भी
 डिप्टी साहेब बदरियाफत सरिस्ते खजाना के ऐसी तजवीज
 फरमावे कि जिसमें फौरन ^{यह} मुकदमा खत्म ब तय हो जावे ।
 तारीख १० अक्टूबर दसतख्त हाकिम रोजनामवा ^{नं०} १०११
 बजलास मुन्शी नन्द किशोर साहेब कहादुर
 फौरनदखल दिलाया जावे और दखल नमा लिया जावे और वास्ता
 दिलाये जाने नगदी के यह कार्यवाही भेजीये । कि दूसरी दफा
 आज तहरीर कैफियत मुफससल बनाम इकहन्टे दिया गया है
 और ^{नाद} गुजरने रिपो टके हुकुम मुनासिब दिया जायेगा १० अक्टूबर १८६५
 द० हाकिम

जनावे आली बन्ने आली दाम हशमतहू

कार्यवाही दी जाने जमीन के खत्म हुई और ब याबिन्दा को
 दखल दिलाया गया और दखल नमा भी रूकस हूजर के ब तस्दीक
 हो गया । अब निस्का उन कागजात के हुकुम मुनासिब होना
 चाहिये - मारुजा १६ अक्टूबर १८६५ ई० कम्तरीन भोला नाथ
 बजलास मुन्शी नन्द किशोर साहब कहादुर

(22)

बाद मुलाहिजा कैफियत तामीली के --- हुकुम हुआ कि ----

मौजा ^{वाके} बहरन पुर ~~क~~ शोला पुरी जो मावड़ा में दी गयी

अनर रजिस्टर से खारिज हो और बाद तकमील - - - -

कागजात तामीर ^{दाखिल} दफ्तर और ज़रूरत जवाब के हो तो अंग्रेजी में

लिखाया जाये । अलमरकूम ३० अक्टूबर सन १८६५ ई० दस्तखत

हाकिम लक्ष्मण प्रसाद नक्कल नवीस

*Verified to be correct
transliteration
H. J. J. J.
23/9/92*

81A/3

نقل بطور سند / صفحہ نزول

بھنور ششی نند کشور صاحب اکسٹرا اسٹنٹ کمشنر بہادر

جناب عالی متعالی دام شمسہ

تعمیل حکم رقم ۵۵/۱۸۶۵ء در باب دی جانے فقہی وزین خطیب مسجد جنم استھان کو عرض رسا ہوں کہ حال دیجانی زر فقہی اور پرگنہ اب کس سال سے سائل کو ملنا چاہئے مفصل رپورٹ اکونٹ سے دریافت بندگان عالی ہوگا اور صورت عوضانہ یہ ہے کہ بتاریخ ۱۶ ستمبر ۱۸۶۳ء بھورنپور موضع مسلم جمعہ ۱۹۳/ اور زمین جمع ۱۰۹/۰۳ حلقہ آراضی شعلہ پوری واقع سانگھ سے ہمگیں ۳۰۲/۰۳ کی آراضی تجویز ہوگی ۲۳ دسمبر ۱۸۶۳ء رپورٹ بھنور صاحب کمشنر بہادر بھیجا گیا کہ یہ سب کارروائی مسل میں موجود ہے اور در ۱۲۳۳ فصلی پٹہ موضع بھورنپور جمعہ ۲۰۰/ اور پٹہ آراضیات شعلہ پوری مطابق جمع ۲۲۳ فصلی تقسیم ہوگی۔ معروضہ ۶ ستمبر ۱۸۶۵ء العبد مکتوبین بھولانا تھ اجلاس ششی نند کشور صاحب اکسٹرا اسٹنٹ کمشنر بہادر

چونکہ حسب ورور و بکار علاحدہ کے حکم دخل دہانی کا دیا گیا اس لئے حکم ہوا کہ یہ رپورٹ شامل مسل کے رہے رقم ۱۲ ستمبر ۱۸۶۵ء دستخط حاکم

اجلاس مسٹر بابرک کانیگی صاحب بہادر ڈپٹی کمشنر بہادر

خود ملاحظہ حکم ششی نند کشور صاحب بہادر کے حکم ہوا کہ بلا لحاظ اضافہ کے فی الفور یا بندہ معاوضہ کو دخل دیا جاوے۔ تحہ باجلاس ششی نند کشور صاحب بہادر پیش ہو کہ براہر بانی بلا لحاظ رپورٹ داروغہ کے کہ شاید اب بھی کوئی رپورٹ نہ دیوں یا بندہ معاوضہ کو دخل دیا جاوے۔ جو ایک سوال سائل بابت پانے فقہی جو سابق سے مقرر تھا شامل مسل کے ہے اوکی بابت بھی ڈپٹی صاحب دریافت سر شیشہ ان کی ایسی فرمادیں کہ جسمیں فوراً یہ مقدمہ ختم و طے ہو جاوے۔ بتاریخ ۱۰ اکتوبر ۱۸۶۵ء دستخط حاکم نمبر روزنامہ ۱۰۱۱ اجلاس ششی نند کشور صاحب بہادر

فوراً دخل دلا یا جاوے اور دخل نامہ لیا جاوے اور واسطہ دلائے جانے فقہی کے یہ کارروائی ہوئی ہے کہ دوسری دفعہ آج تحریر کیفیت مفصل بنام اکونٹ دیا گیا بعد گزرنے رپورٹ کے حکم مناسب دیا جائیگا ۱۰ اکتوبر ۱۸۶۵ء دستخط حاکم

جناب عالی متعالی دام شمسہ

کارروائی دئے جانے زمین کی ختم ہوئی اور یا بندہ کو دخل دلا یا گیا اور دخل نامہ بھی رو بروی حضور کے تصدیق ہو گیا اب نسبت ان کاغذات کے حکم مناسب ہونا چاہئے..... معروضہ ۱۹ اکتوبر ۱۹۶۵ء العبد مکتوبین بھولانا تھ

اجلاس ششی نند کشور صاحب بہادر

بعد ملاحظہ کیفیت تعمیلی کے حکم ہوا کہ موضع بھورن پور و آراضی شعلہ پوری جو معاوضہ میں دی گئی رجسٹر سے خارج ہو اور بعد تکمیل..... کاغذات داخل دفتر اور اگر ضرورت جواب کی ہو تو انگریزی میں لکھایا جاوے رقم ۳۰ اکتوبر ۱۸۶۵ء دستخط حاکم کچھن پر ساد نقل نویس

बहुजूर मुंशी नन्द किशोर साहब बहादुर एक्स्ट्रा असिस्टंट कमिशनर बहादुर

जनाब आली मुतआली दामा हशमतहु

बतामील हुक्म रकमजदा 5 सितम्बर 1865ई0 दर बाब दी जानी नकदी व जमीन खतीब मस्जिद जमन स्थान को अर्ज रसां हूं कि हाल दी जाने जर नकदी और परगना अब किस साल से सायल को मिलना चाहिये मुफस्सल रिपोर्ट एकोट से दरयाफत बंदगाने आली होगा और सूरत इवज़ाना यह है कि बतारीख 16 सितम्बर 1863ई0 भूरनपुर मौजा मुसल्लम जमई 193/- और जमीन जमा 109/03 हलका आराजी शोलापुरी वाके साहबगंज से हमार्गी 302/03 आना की अराजी तजवीज़ होगी 23 दिसम्बर 1864ई0 रपोट बहुजूर साहब कमिशनर बहादुर भेजा गया कि यह सब कार्रवाई मिसिल में मौजूद है और दर 1273 फसली पट्टा मौजा भूरनपुर बजमा 200/- और पट्टा अराजियात शोलापुर से मुताबिक जमा 1272 फसली तकसीम होगी मय मारुज़ा6 सितम्बर 1865ई0

अलअब्द

कमतरीन भोलानाथ

इजलास मुंशी नन्द किशोर साहब बहादुर एक्स्ट्रा असिस्टंट कमिशनर

चूंकि हस्ब वुरूद रोबकार अलाहदा के हुक्म दखलदहानी का दिया गया इस लिये

हुक्म हुआ कि

यह रपोट शामिल मिसिल के रहे अल-मरकूम 12 सितम्बर 1865ई0 दस्तखत हाकिम

इजलास मिस्टर बाबरक कार नेगी साहब बहादुर डिप्टी कमिशनर बहादुर

बाद मुलाहजा हुक्म मुंशी नन्द किशोर साहब बहादुर के —हुक्म हुआ कि— बिला लिहाज इज़ाफा के फिलफौर याबिन्दा मुआवजा को दखल दिलाजावे तहत बइजलास मुंशी नन्द किशोर साहब बहादुर पेश हो कि बराये महरबानी बिला लिहाज रिपोट दरोगा के कि शायद अब भी कोई रिपोट न देवें याबिन्दा मुआवजा को दखल दिलाया जावे व जो एक सवाल सायल बाबत पाने नकदी जो साबिक से मुकरर था शामिल मिसिल के है उसकी

बाबत भी डिप्टी साहब बदरयाफ्त सर रिश्ता खाजाना के एसी..... फरमादें कि जिसमें फौरन यह मुकदमा खत्म व तय होजावे बतारीख 10 अक्तूबर 1865ई0 दस्तखत हाकिम नम्बर रोजनामचा 1011

इजलास मुंशी नन्द किशोर साहब बहादुर

फौरन दखल दिलाया जावे और दखलनामा लिया जावे और वास्ते दिलाये जाने नकदी के यह कार्रवाई हुई है कि दूसरी दफा आज तहरीर कैफियत मुफस्सल बनाम इकोट दिया गया बाद गुजरने रिपोर्ट के हुक्म मुनासिब दिया जायेगा। 10 अक्तूबर 1865ई0 दस्तखत हाकिम

जनाब आली मुत्तआली दामा हशमतहु

कार्रवाई दिये जाने जमीन की खत्म हुई और याबिन्दा को दखल दिलाया गया और दखलनामा भी रूबरूये हुजूर के तस्दीक होगया अब निस्बत इन कागजात के हुक्म मुनासिब होना चाहिये मारुजा 19 अक्तूबर 1865ई0

अलअब्द कमतरीन भोलानाथ

इजलास मुंशी नन्द किशोर साहब बहादुर

बाद मुलाहजा कैफियत तामीली के ——— हुक्म हुआ कि ——— मौजा भूरनपुर व अराजी शोलापुरी जो मुआवजा में दी गई रजिस्टर से खारजि हो और बाद तकमील कागजात दाखिल दफ्तर और अगर जरूरत जवाब की हो तो अंग्रेजी में लिखाया जावे अलमरकूम 30 अक्तूबर 1965ई0 दस्तखत हाकिम

लक्षमन प्रसाद नकल नवीस

Before Munshi Nand Kishore Saheb Bahadur Extra Asstt. Commissioner Janab-e-Ali Mutaali Dam-e-Hashmatahu. In compliance of the order dated September 5, 1865. In the matter of giving cash payment and land to the Khatib Masjid Janam Sthan, I beg to know that from which year, the cash payment and Pargana would be given to the petitioner. Detailed report from Accounts may be take and position of compensation is that on dated 16th September 1863. Whereas from Bhooranpur Mauza Musallam Jamai 193/- and Zameen Jama 109/3.5 Halka Araasi Sholapuri situated at Sahebganj, Hamangi 302/3.5 Anna Araazi will be proposed. Dated December 23, 1864. Report forwarded to the Commissioner Bahadur. That all this action is recorded in the file and patta 1273 Fazli Mauza Bhooranpur Bajama 200/- and patta for plots of Sholapur, Bajama 1272 Fasli will be distributed. September 6, 1865. Alabd. Yours sincerely Bhol Nath.

Ijlas Munshi Nand Kishore Saheb Bahadur Extra Asstt. Commissioner. According to the Rubakar Alahda, orders for Dakhal Dehani were passed. So it was ordered : This report should be attached in the file. Written on September 12, 1865. Ijlas Mr. Babrak Carnegi Saheb Bahadur Deputy Commissioner. Sd/- Officer.

After perusal of the order of Munshi Nand Kishore Saheb Bahadur ---- it is ordered that without consideration of the increase, Yabinda Muawza be given possession immediately. Put up before Ijlas Munshi Nand Kishore that please, without consideration of the report of Daroga which may not be coming even now, Yabinda Muawza may be given possession. Regarding the question of the

petitioner for getting cash payment, which was being paid to him for the past years and which is attached to the file, Deputy Saheb would inquire from the incharge Treasury, and would issue such orders so that this case is finally disposed off. Dated October 10, 1865. Signature of the Officer No. Roznamacha 1011. Ijlas Munshi Nand Kishore Saheb Bahaddur. Possession be given immediately and Dakhalnama be taken and for giving him cash, action has been taken under which for the second time detailed position has been written and given to account. After presentation of the report suitable orders will be issued. Dated October 10, 1865 Sd/-officer.

Janab-e-Aali Mutaali Dam-e-Hashmatahu. The process of giving land is completed and possession has been given to the Yabinda and Dakhalnama has also been executed before this honorable Court. Now suitable orders may kindly be issued in respect of the papers. Dated October 19, 1865.

Alabd. Yours sincerely Bhola Nath.

Ijlas Munshi Nand Kishore Saheb Bahadur. After perusal of the position of the compliance it is ordered that Araazi of Mauza Bhooranpur and Araazi Sholapur as given in compensation be taken out from the Register and after executing all the necessary documents be consigned to the office and if there arises any need of reply, it should be written in English. Dated October 30, 1965 Sd/- Officer. Lakshman Prasad Naqal Naweess.

۵/مارچ ۱۸۶۶ء مطابق چیت بدی چوتھ سبت ۱۹۲۲ء بروز دوشنبہ ہاتھ محمد اصغر..... تعلقہ ار..... معرفت خود یک قطعہ قیمتی ۸۸۰ مقام محلہ
اسامیل گنج ضلع فیض آباد واسطے سوال کے فروخت کیا۔ دستخط غیر واضح

بوجہ حکم ۳ اکتوبر ۱۸۶۷ء کو بعد درخواست نقل شہید کاغذ کے درست تحریر ہوئی۔ دستخط غیر واضح ۳۰ اکتوبر ۱۸۶۷ء

الف نمبری ۲۹ ۲۵ء شیعہ سینڈل بورڈ، نام سنی سنٹرل بورڈ مدخلہ وکیل مدعی بتاریخ ۱۰/۱۰/۲۵ء

नं० 172

5 मार्च 1866 मुताबिक चैत बदी चौथ सम्बत 1922 रोज दोशम्बा हाथ मोहम्मद असगर

.....ताल्लुकेदार..... मार्फत खुद एक किता कीमती 8 आना मकाम मुहल्ला इसमाईल

गंज जिला फैजाबाद के वास्ते सवाल के फरोख्त किया।

ह० अपठनीय

बमौजिब हुक्म 3 अक्टूबर 1867 को बाद दरख्वास्त नकल असल ठप्पा कागज़ वास्ते

तहरीर हुई

ह० अपठनीय

30 अक्टूबर 67

अलिफ नम्बरी 29 सन 45 शिया सेन्द्रल बोर्ड बनाम सुन्नी सेन्द्रल बोर्ड मुदखला वकील

मुद्दई बतारीख 1/10/45

Dated March 5, 1866 corresponding to Chait Badi Chauth Sambat 1922, Monday. Mohammad Asghar through self. Ek qita qeemati /8/- Anna Muqam Mohalla Ganj District Faizabad, sold for Sawaal. Sd/- illegible.

As per order dated October 3, 1867 after the application for the copy of original patta, sold paper for tehrir Sd/- Illegible, October 30, 67.

Alif no. 29, year 45 Shia Central Board Vs. Sunni Central Board filed by the Counsel of the petitioner 01/10/45.